निर्दलीय

अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका

- साहित्य
- कला
- संस्कृति
- उद्यमिता

प्रधान संपादक- कैलाश आदमी

उप संपादक : सरिता गर्ग 'सरि'
प्रवासी संपादक : डॉ. सुनीता शर्मा

वर्ष : २० | अंक : ०७ | नई दिल्ली, जनवरी २०२६ | मूल्य : १०/- | विशेषांक : ५०/-

नया साल-नया सोच विशेषांक

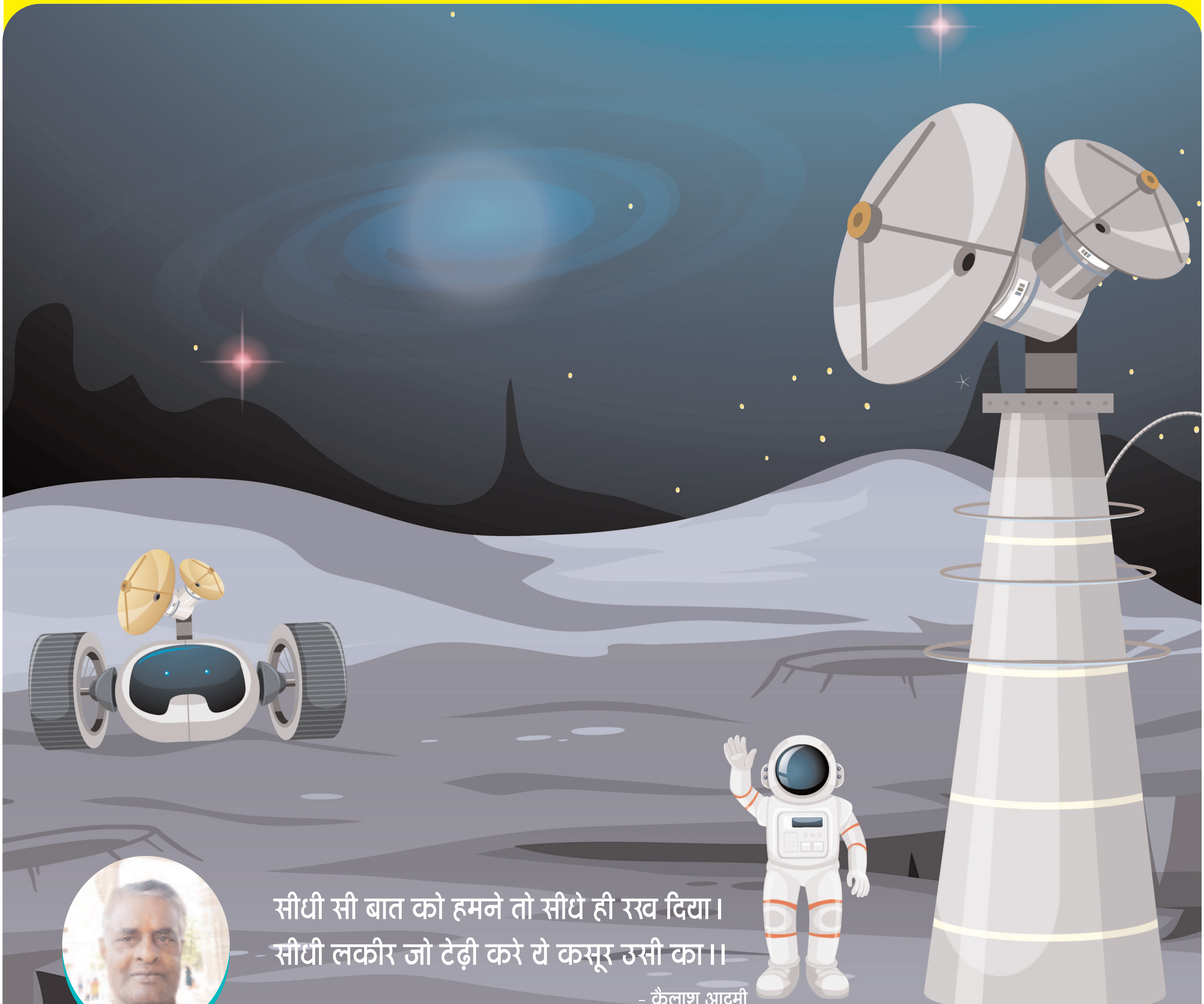

सीधी सी बात को हमने तो सीधे ही रख दिया।
सीधी लकीर जो टेढ़ी करे ये कसूर उसी का।।

- कैलाश आदमी

(आमुख) पृष्ठ ४-६

मासिक 'निर्दलीय' के आगामी अंक

विगत दो दशकों से नियमित प्रकाशित निर्दलीय प्रकाशन की बहुरंगी अंतर्राष्ट्रीय मासिक पत्रिका 'निर्दलीय' प्रति माह विशेषांक के रूप मे प्रकाशित हो रही है। नई दिल्ली स्थित सलाहकार श्री सुरेश खांडवेकर एवं श्रीमती कविता मल्होत्रा और संरक्षक सेठ रामनिवास गुप्ता एवं श्री रमेश सिंह राघव के सहयोग से मासिक पत्रिका की साज-साज्जा और सामग्री में निरंतर उत्कृष्टता एवं विकास परिलक्षित है।

इस तारतम्य में आगामी वर्ष २०२५-२६ के लिए संपादकीय मंडल ने बारह विषयों का चयन किया है। आप सभी से प्रार्थना है कि आप इन विषयों पर अपने आलेख, खट्टे मीठे अनुभव, काव्य, कथा-कहानी,कविता, प्रहसन,संस्मरण अदि मासिक पत्रिका में प्रकाशनार्थ भेज सकते हैं। आपसे निवेदन है निम्नलिखित विषयों पर प्रकाशित होने जा रहे निर्दलीय मासिक पत्रिका के विशेषांकों के लिए विषयांतर्गत सामग्री अवश्य भेजें। माहवार विषय इस प्रकार है--

फरवरी - अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, मार्च- वासंती उल्लास, अप्रैल - फुर्सत, मई -सैर सपाटा, जून-मुखर अभिव्यक्ति, जुलाई- निर्दलीय के अंतरराष्ट्रीय वार्षिक सम्मान समारोह पर केंद्रित, अगस्त - स्वाधीनता और लोकतंत्र, सितंबर - भाषाई सौहार्द, अक्टूबर - पुस्तकें ही जीवन, नवंबर- शिक्षा और साहित्य, दिसंबर - पर्यावरण एवं जलवायु संरक्षण, जनवरी- नया साल, नया सोच।

माह फरवरी २०२६ में प्रकाशित होने जा रहे विशेषांक हेतु - 'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता' विषय पर रचनाएं/आलेख १५ जनवरी २०२६ तक व्हाट्स ऐप/मेल पर मिल जाना चाहिए।

* कैलाश आदमी, संस्थापक संपादक
9424443401/ ८८३९७९७४४८
मेल nirdaliyadaily@gmail.com

निर्दलीय से जुड़ना अब आसान

निर्दलीय दैनिक / साप्ताहिक /मासिक (मुद्रित आकार)का शुल्क भेजना अब आसान हो गया है क्योंकि अब आप भारतीय स्टेट बैंक, मुख्य शाखा भोपाल के हमारे निर्दलीय के खाता क्रमांक- 30030303507(IFSC code- sbin0001308 के अलावा हमारे मोबाइल फोन 9424443401 से जुड़े फोन पे या गूगल पे से भी शुल्क /सहयोग राशि भेज सकते हैं। दैनिक,साप्ताहिक व मासिक मुद्रित के साथ ई-पेपर भी हैं। ई-पत्रिका या पेपर हेतु शुल्क भेजना ऐच्छिक है।

मासिक निर्दलीय वार्षिकः रु.600/- साधारण डाक
(स्पीड पोस्ट रु. 1000)
संरक्षक/सलाहकार पद प्रतिष्ठार्थ

वार्षिक : रु।5000/- तीन वर्ष 11000/-
संरक्षक/सलाहकारः रु. 20000/-

नोट- दैनिक निर्दलीय प्रति अंक दो रु. (वार्षिक स्पीड पोस्ट से एक हजार रु), साप्ताहिक 'निर्दलीय' प्रति अंक पांच रु.(वार्षिक शुल्क 500 रु) साधारण डाक व्यय सहित। स्पीड पोस्ट से मंगवाना है तो 1000 रु. । साप्ताहिक व मासिक निर्दलीय दोनों स्पीड पोस्ट से मंगवाना है तो कुल राशि 2000 रु. भेजें।

व्यवस्थापकीय पता -निर्दलीय, एफ 116/7 शिवाजी नगर, भोपाल 462016

खाताधारक का नाम- निर्दलीय
Nirdaliya
बैंक-भारतीय स्टेट बैंक
शाखा- मुख्य शाखा, भोपाल
462003
खाता क्र. 30030303507
आईएफएससी कोड (कूट संकेत)
-एसबीआईएन 0001308
(sbin 0001308)

दैनिक निर्दलीय, साप्ताहिक निर्दलीय और मासिक निर्दलीय की वार्षिक ग्राहकी/संरक्षक/सलाहकार सहयोग राशि हेतु दूरभाष क्र. 9424443401/8839797448 पर phone pay/Google pay के जरिए जमा कर स्क्रीन प्रिंट भेजें।

-प्रबंधक

UPI ID: nirdaliyadaily@okhdfcbank

अंतरंग

स्तंभ	शीर्षक	लेखक/ कवि/समीक्षक	पृष्ठ
आमुख	नया साल, नया सोच	कैलाश आदमी	४-६
आलेख	आशाओं का नया उजाला	वल्लभ किशोर शर्मा	७
लघुकथा/दोहे	नए साल का जश्न	वंदना सहाय/शरद नारायण खरे	८
आलेख	नव संवेदना: नव संकल्प	डॉ. सुनीता शर्मा	९
--,,--	विचारों का रोपण	सरिता गर्ग 'सरि'	१०
--,,--	भीतर की दुनिया बदलें	डॉ. कविता मल्होत्रा	११
कविता	नए साल में कीजिए...	राणा लिघोरी	११
आलेख	नए अनुसंधान/कविता	राजकुमार चौकसे/शशि शाक्य 'शशि'	१२
--,,--	हवा नई ले निकले सूरज	कृष्णदेव चतुर्वेदी	१३
कविता	नव वर्ष गीत	मधुबाला पांडे	१३
आलेख	नए इरादों के जागरण का समय	चंचलिका शर्मा	१४
कविता	नव वर्ष मनाइए	देवेंद्र थापक	१४
आलेख	कैसे मनाएं नव वर्ष की खुशियां	मनोरमा पंत	१५
--,,--	सकारात्मक सोच	मनोज चतुर्वेदी 'आनंद'	१६
--,,--	बदलाव रातों रात नहीं आता	विवेक रंजन श्रीवास्तव	१७
--,,--	काल्पनिक गणना	अनिल त्रिवेदी	१८
--,,--	आत्ममंथन का अवसर	श्याम सखी 'सीमा'	१९
कविता	प्रेम की नई सोच	डॉ. सुनीता त्रिपाठी	१९
आलेख	नए विचारों से नए साल का स्वागत	डॉ. सीमा अग्रवाल	२०
--,,--	जीवन में कोई कार्य असंभव नहीं	आशा लता दुबे	२१
कविता	नव वर्ष	डॉ. माडवी सिंह	२१
कहानी	कुछ अलग	केशव चरण दुबे	२२-२३
कविता	बदलाव	रानी सिंगला	२३
आलेख	फिर वही शुरुआत	सूफिया जैदी	२४
आलेख	नवीनता का सतत आग्रह	प्रेमचंद गुप्त	२५-२६
कविता	स्वागत नूतन वर्ष तुम्हारा	प्रतिभा द्विवेदी	२६
आलेख	नवीन सोच के साथ	सविता व्यास	२७-२८
--,,--	जीवन शैली बदलें	प्रमिला राउत	२८
--,,--	लहर पर सवार	मंजू शकुन खरे	२९
--,,--	नई पीढ़ी में नया सोच	वाणी नित्या	३०
--,,--	युवाओं की जीवन शैली	ललित शर्मा	३१
--,,--	देश की सरहद	इंदिरा किसलय	३२

अंतर्राष्ट्रीय मासिक पत्रिका निर्दलीय

संरक्षक/सलाहकार सुरेन्द्रनाथ दुबे, मेघा पाटकर, डॉ। पवन कुमार जैन, सोहनराज तातेड, सेठ रामनिवास गुप्ता, कविता मल्होत्रा, मधुवाला पांडे

कार्यकारी संपादक – प्रिय अभिषेक (प्रिंस अभिशेख अज्ञानी) ९८२६४२२८२० *प्रबंध सम्पादक– अशोक 'निर्मल'

मूल्य 10 रुपये/ विशेषांक 50/- वार्षिक 600/- पंजीकृत डाक 1000/- शुल्क फोन पे/जी पे 9424443401 QR CODE द्वारा या निर्दलीय (nirdaliya) के SBI मुख्य शाखा भोपाल खाता क्रमांक 30030303507 (IFSC code sbin0001308) अथवा निर्दलीय प्रकाशन के यूनियन बैंक (महाराण प्रताप नगर जोन-2 भोपाल) के खाता क्रं। 101211010000060 में जमा कर सकते हैं।

(RNI regn. DELHI/2006/19211) ईमेल nirdaliyadaily@gmail.com ई पेपर nirdaliya.com

भोपाल कार्यालय/संपर्क: निर्दलीय प्रकाशन-एफ११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल ४६२०१६ दूरसंपर्क०७५५ -२७७२४०६

स्वामी,मुद्रक-प्रकाशक-संपादक-कैलाश श्रीवास्तव 'आदमी' (9424443401/8839797448) द्वारा निर्दलीस प्रेस, भोपाल से मुद्रित, राघव भवन सी 6/72 दयालपुर), दिल्ली 110 090 से प्रकाशित।

सीधी सी बात को हमने तो सीधे ही रख दिया। सीधी लकीर जो टेढ़ी करे ये कसूर उसी का।।

नया साल नया सोच

कैलाश आदमी

वर्ष २०२५ समापन की ओर अग्रसर है। इस दृष्टि से बीत रहे वर्ष के साथ अतीत पर विहंगम दृष्टि और आने वाले वर्ष में दुनिया के साथ भारत वर्ष की दशा एवं दिशा क्या होगी इस पर सोचना आवश्यक है।

प्रति वर्ष नए वर्ष के आगमन की पूर्व बेला में अधिकांश बुद्धिजीवी और देश दुनिया की घटनाओं पर निगाह रखने वाले लोग आगामी वर्ष की तैयारियां शुरू कर देते हैं। वैसे हिंदू धर्म के अनुयायी आमतौर पर अपना पृथक वार्षिक कैलेंडर रखते हैं जिसे पंचांग कहा जाता है। अधिकांशजन विक्रम संवत को मानते हैं लेकिन पंचांग का प्रचलन कम होता जा रहा है और वे अंग्रेजों तथा यूरोपीय लोगों द्वारा मान्य कैलेंडर को ही अपनाने लगे हैं।

नव वर्ष के आगमन की पूर्व बेला में भारत ही नहीं बल्कि दुनिया के प्रायः सभी देशों में लोग अपने देश की संस्कृति और सभ्यता के परिवेश में विविध आयोजन कर अपनी प्रसन्नता और खुशी का इजहार करते हैं। अधिकांश देशों में ईसाई धर्म के अनुयायियों की संख्या सर्वाधिक है। वे २५ दिसंबर के क्रिसमस त्यौहार से ही नववर्ष समारोहों का आयोजन शुरू कर देते हैं तो आबादी की दृष्टि से दूसरा स्थान रखने वाले इस्लाम के अनुयायी भी नववर्ष की खुशियां अपने ढंग से व्यक्त करते हैं।

दुनिया में हिंदू धर्म के मानने वालों की संख्या तीसरे क्रम पर है जो मुख्यतया भारत वर्ष में निवास करते हैं किंतु जिन भारतीयों ने विदेशी नागरिकता ग्रहण कर ली है अथवा जो भारतीय नागरिक विदेशों में सेवा कर रहे हैं अथवा छात्र हैं वे भी नव वर्ष की पूर्व बेला में ही अपनी खुशियों का प्राकट्य आरंभ कर देते हैं। अन्य धर्मावलंबियों में बौद्ध, जैन, सिख, यहूदी आदि भारत सहित कई देशों में निवास करते हैं तथा वे भी अपने ढंग से नव वर्ष को पर्व या त्यौहार के रूप में मनाते हैं।

वर्ष २०२५ में दुनिया में जो प्रमुख घटनाएं हुईं उनसे सबक लेकर आने वाले वर्ष २०२६ के लिए संयुक्त राष्ट्रसंघ जैसी वैश्विक संस्था को योजना बनाना था किंतु यह संस्था प्रभावकारी नहीं रही है। चूंकि इस संस्था पर निशेषाधिकार रखने वाले पांच देशों का वर्चस्व है इसलिए वे बहुमत का निरादर करते हुए मनमाने निर्णय लेते हैं। ऐसा करते समय वे केवल अपने हितों का ध्यान रखते हैं जिसके कारण दुनिया के विभिन्न देशों में संघर्ष की स्थिति निर्मित होती है जो युद्ध में परिणित होने पर भी नियंत्रण में नहीं रह पाती। उदाहरणार्थ यूक्रेन-रूस और इजराइल-फिलिस्तीन के मध्य कई वर्षों से चल रहे युद्धों को गिनाया जा सकता है। यदि वैश्विक संस्था सक्षम हो तो ना केवल इस तरह के युद्धों और द्वंद्वों को रोका जा सकता है बल्कि जो देश परमाणु यौद्धिक क्षमताएं अर्जित कर चुके हैं तथा आगे इसे और विस्तार देने में लगे हैं उन पर भी लगाम कसी जा सकती है। संयुक्त राष्ट्र संघ का गठन होने के पूर्व दो विश्व युद्ध हो चुके हैं। इन दोनों युद्धों के मध्य लीग ऑफ नेशंस नामक विश्व संस्था का गठन किया गया था जो नाकाम रही और इस कारण द्वितीय विश्व युद्ध के बाद संयुक्त राष्ट्र संघ नामक नई संस्था का गठन किया गया किंतु अमेरिका, चीन, ब्रिटेन, रूस और फ्रांस को निशेषाधिकार दिए जाने से इसे लोकतांत्रिक स्वरूप ना होकर तानाशाही स्वरूप मिल गया जिसके परिणाम पूरी दुनिया को भुगतना पड़ रहे हैं और विश्व शांति की बात केवल कल्पनाओं में रह गई है।

वर्ष २०२५ में भारत में जो प्रमुख घटनाएं हुईं उनमें पहलगाम की घटना उल्लेखनीय है जिसमें २६ पर्यटकों की हत्या कर दी गई किंतु इस नरसंहार के सूत्रधार का पता आज तक नहीं लगाया जा सका जबकि इसके बाद दिल्ली में जो बम विस्फोट की घटना हुई उसके सूत्रधारों का पता लगा लिया गया और उनके विरूद्ध कार्रवाई की जा रही है। इन आतंकवादी घटनाओं के अलावा समय-समय पर नक्सलवादी जैसे आतंकवादी भी क्रियाशील रहे किंतु सैन्य कार्रवाई के फलस्वरूप वे अब नियंत्रण में आ गए हैं किंतु जिन कारणों से नक्सलवाद पनपा उन कारणों की ओर किंचित ध्यान ना दिए जाने से ऐसी हिंसक ताकतों के आगे नई शक्ल

अख्तियार कर सकती है।

२०२५ में ही हिंदुओं के सबसे अधिक प्रभावशाली कट्टरपंथी संगठन राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना के सौ वर्ष पूरे होने पर विजयादशमी के दिन विशेष आयोजन किए गए तथा आगे वर्षभर यह श्रृंखला किसी न किसी रूप में जारी रखी जा रही है जो गहन चिंता का विषय है क्योंकि यह संगठन भारत का एकमात्र ऐसा संगठन है जिसके सदस्यों का लेखा-जोखा नहीं रखा जाता और ना ही वार्षिक आय-व्यय का सार्वजनिक लेखा रखा जाता है। चूंकि यह संगठन अपंजीकृत है इसलिए इसे इस तरह की छूट मिली हुई है। ना केवल इस तरह की छूट चिंताजनक है बल्कि इस संगठन से जुड़े स्वयं सेवकों और स्वयं सेविकाओं को अस्त्र-शस्त्र प्रशिक्षण और सार्वजनिक प्रदर्शन की भी छूट दी जाती है तथा शासकीय कर्मचारियों के इस संगठन से जुड़ने पर भी शासन किसी आपत्ति की कोई सुनवाई नहीं करता जिससे ना केवल गैर संघी हिंदुओं और अन्य संप्रदायों के लोगों को यह आशंका बनी रहती है कि ना जाने कब और किस समय ये स्वयं सेवक उन पर टूट पड़ें। गौ रक्षा, शराब बंदी, लव जिहाद आदि कई ऐसे मुद्दे सामने आए जब इनकी आड़ में गैर संघियों पर प्राणघातक हमले किए गए। इसके साथ ही जब कोई हिंदू किसी अन्य धर्म की युवती या महिला के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित करता है अथवा कोई गैर-हिंदू हिंदू धर्म में दाखिला लेता है अर्थात धर्म परिवर्तन करता है तो संघ से जुड़े लोग जश्न मनाते हैं जबकि कोई अन्य धर्मावलंबी हिंदू धर्म की कन्या या महिला से विवाह करता है अथवा अपने धर्म में शामिल करता है तो इतने अधिक कड़े नियम बना दिए गए हैं कि ऐसे व्यक्तियों को जेल के सींखचों में डाला जाना आम बात हो गई है।

यह ध्यान देने योग्य बात है कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ पर हिंसक गतिविधियों में भाग लेने अथवा ऐसी गतिविधियों में भाग लेने की आशंका लेकर कई बार बंदिशें लगाई जा चुकी हैं किंतु संघ का दलीय राजनीति से गठजोड़ होने के कारण संघ को छूट मिल जाती है जिससे समय-समय पर समाज में हिंसक घटनाएं होती रहती हैं। इसे दृष्टिगत रखते हुए संघ पर आंशिक बंदिशें लगाई जाना चाहिए। यथा शासकीय कर्मचारियों के संघ से संबंध रखने पर रोक लगाई जाना उचित होगा किंतु वर्तमान सरकार से इसकी उम्मीद करना व्यर्थ है क्योंकि प्रधानमंत्री और गृहमंत्री से लेकर भाजपा शासित राज्यों के मुख्यमंत्री और मंत्री ही नहीं सांसद और विधायक भी तभी पद पा सकते हैं जब उनका संघ से किसी न किसी रूप में जुड़ाव रहा हो। वैसे भाजपा सहित सभी दलों में संसद व विधानसभाओं के लिए प्रत्याशियों का चयन उनकी आपराधिक पृष्ठभूमि के साथ सामाजिक बल्कि जातिगत व आर्थिक पृष्ठभूमि देखकर किया जाता है जिसमें भाजपा सबसे आगे है। अतएव आज के समय केंद्र व राज्य सरकारों से किसी तरह की उम्मीद करना व्यर्थ है। अन्य दलों को अवश्य इस ओर ध्यान देना चाहिए ताकि अपराधियों के राजनीति में प्रवेश पर बंदिश लगाई जा सके। वैसे ये दल भी पंचायत से लेकर संसद तक उसी व्यक्ति को टिकट देते हैं जिसके जीतने की संभावना अधिक हो। चूंकि अपराधी, संपन्न और जातिगत दबदबा रखने वाले व्यक्तियों के जीतने की संभावना अधिक रहती है इसलिए इन दलों से भी उम्मीद करना व्यर्थ है। मतदाताओं को ही इस संबंध में उचित रवैया अपनाना होगा।

वर्ष २०२५ में राष्ट्रगीत वंदे मातरम को लेकर कई आयोजन संपन्न हुए किंतु सत्तारूढ़ दल भाजपा द्वारा यह कहकर वंदेमातरम को ही विवाद का विषय बना दिया गया कि कांग्रेस ने वंदे मारतम के सभी छंद राष्ट्रगीत के रूप में लिए जाने के स्थान पर केवल दो छंद सम्मिलित होने दिए जिसकी परिणिति कालांतर में राष्ट्र विभाजन के रूप में सामने आई जबकि हकीकत यह है कि कांग्रेस के जिस अधिवेशन में पहली बार वंदे मातरम गाया गया उसे गाने वाले श्री रवींद्र नाथ टैगोर जैसे महापुरुष थे और उन्होंने ऐसा करके देश को कट्टरपंथी हिंदुओं के लोकतंत्र के रूप में परिवर्तित होने से रोक दिया था। यदि उस समय संविधान सभा ने श्री टैगोर की भावनाओं के अनुरूप दो छंदों वाले वंदे मातरम को राष्ट्रगीत ना माना होता तो इसके दुष्परिणाम भारत वर्ष आज तक भुगत रहा होता।

वैसे देश का जो संविधान है उसे बनाने वाले विद्वानों ने तत्कालीन परिस्थितियों पर ही अधिक ध्यान दिया था। इसके बावजूद अनुसूचित जाति व जनजातियों के लिए जो आरक्षण व्यवस्था की गई वह केवल १० वर्ष के लिए थी। ऐसा कहा गया कि १० वर्षों में अनुसूचित जाति-जनजाति के हित में ऐसे निर्णय लिए जाएंगे जिससे आगे चलकर आरक्षण की आवश्यकता ना रहे। चूंकि १० वर्षों में अनुसूचित जाति-जनजाति को अन्य वर्गों के समकक्ष नहीं लाया जा सका इसलिए संसद द्वारा हर १० वर्ष बाद आरक्षण की अवधि बढ़ाई जाती रही। यही नहीं जब

भाजपा के समर्थन से केंद्र में विश्वनाथ प्रतापसिंह के नेतृत्व में सरकार बनी तो उसने पिछड़े वर्ग के लिए भी आरक्षण व्यवस्था लागू कर दी। यद्यपि भाजपा ने इसका विरोध करते हुए समर्थन वापस ले लिया लेकिन तब तक संविधान में संशोधन किया जा चुका था। अब वर्ष २०१४ से भाजपानीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) सत्ता में है किंतु उत्तरप्रदेश में हुए पिछले विधानसभा चुनाव में भाजपा को झटका लगा उसे देखते हुए राजग से किसी भी स्तर पर आरक्षण समाप्ति की उम्मीद करना व्यर्थ है क्योंकि बिहार में हाल ही विधानसभा के जो चुनाव हुए उसमें भाजपा और उसके प्रमुख सहयोगी दल जद (यू) को पिछड़े वर्ग के मतों ने ही पुनः सत्तासीन किया है।

मेरा अपना व्यक्तिगत मत यह है कि आरक्षण केवल विपन्न वर्ग को ही दिया जाना चाहिए। सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश पद से विरत होने के पूर्व श्री आरएस गवई ने स्पष्ट मत व्यक्त किया था कि मलाईदार तबके को आरक्षण से वंचित किया जाना चाहिए। श्री गवई ने धर्म बल्कि ईश्वर के बारे में भी अपनी दो टूक राय व्यक्त की तो उन पर सर्वोच्च न्यायालय के ही एक अधिवक्ता ने जूते से हमला कर दिया था। दरअसल जिस याचिका पर श्री गवई सुनवाई कर रहे थे उसमें कहा गया था कि खजुराहो स्थित विष्णु मंदिर के जीर्णोद्धार का विषय पुरातत्व विभाग का है अतएव प्रकरण विभाग के समक्ष ही उठाया जाना चाहिए। जब याचिकाकार ने बार-बार यह जिद की कि श्री विष्णु भगवान की खंडित मूर्ति को दुरुस्त किया जाए तो श्री गवई ने कह दिया कि वह भगवान से ही कहे। इसे लेकर ही ना केवल जूता फेंकने वाला अधिवक्ता बल्कि कट्टरपंथी हिंदू विद्वान न्यायाधीश के विरूद्ध जहर उगलने लगे जबकि पुलिस को स्वयं ही संज्ञान लेकर जूता फेंकने वाले अधिवक्ता के विरूद्ध कार्रवाई करना थी।

न्याय के बारे में कहा जाता है कि देरी से न्याय होना अन्याय तुल्य है। चूंकि निचली अदालतों से लेकर सर्वोच्च अदालत तक करोड़ों मामले वर्षों से लंबित हैं इसलिए यह व्यवस्था की जाना आवश्यक है कि न्याय दिए जाने की अवधि तय की जाए। यदि निर्धारित अवधि में न्यायाधीश निर्णय ना दे पाएं तो पीड़ित व्यक्ति के पक्ष में निर्णय होना मान लिया जाए।

वस्तुतः जब भारत का संविधान बनाया गया तब परिस्थितियां भिन्न थीं और आज सर्वथा भिन्न है इसलिए संविधान का पुर्नलेखन किया जाना चाहिए। नई संविधान सभा गठित की जाए जिसमें ऐसी सरकार बनाए जाने का प्रावधान हो जो गैर दलीय हो। चुनाव भले ही दलीय आधार पर हों किंतु सरकार सभी दलों के विजयी प्रत्याशी और निर्दलीय प्रत्याशी मिलजुलकर सरकार बनाएं। जहां तक प्रधानमंत्री पद का प्रश्न है इस पद पर उस जीते हुए सांसद को अवसर दिया जाए जिसे सर्वाधिक मत मिले हों। अन्य मंत्रियों की नियुक्ति भी इसी क्रम से की जा सकती है। राष्ट्रपति और राज्यपाल पद तुरंत प्रभाव से खत्म किए जाना चाहिए क्योंकि इन पदों की कोई उपयोगिता नहीं है। राष्ट्रपति प्रधानमंत्री पद हेतु चयनित व्यक्ति व अन्य मंत्रियों को केवल शपथ दिलाने का काम करता है। यह काम सर्वोच्च न्यायालय द्वारा नियुक्त किसी विशेष न्यायाधीश से कराया जा सकता है। इसी तरह राज्यों में राज्यपाल का काम संबंधित राज्य के उच्च न्यायालय द्वारा नियुक्त विशेष न्यायाधीश से कराया जा सकता है। इसी तरह संसद में उच्च सदन के नाम पर राज्य सभा की जो व्यवस्था है उसे खत्म किया जाना चाहिए क्योंकि इस सदन के सदस्य के रूप में केवल दलगत राजनीति काम करती है। इसी तरह जिन राज्यों में विधान परिषदें हैं उन्हें भी खत्म किया जाना चाहिए।

देश में सर्वाधिक हिंसा धर्म विशेष से जुड़े व्यक्तियों द्वारा की जाती है। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ हर घटना का दोष मुसलमानों पर मड़ने की चेष्टा करता है जबकि वास्तविकता यह है कि ऐसा कोई धर्म नहीं है जिसमें अपराधी प्रकृति के लोग सम्मिलित ना हों। इसका उपचार यह हो सकता है कि अभी बच्चों को जन्म लेते ही उनके माता-पिता के धर्म से जोड़ दिया जाता है जबकि होना यह चाहिए कि जब वह बालिग हो जाए तब उसे उसकी इच्छानुसार धर्म अंगीकृत करने दिया जाए। जहां तक धर्मांतरण की बात है सभी धर्मांतरण विषयक कानूनों को रद्द किया जाना चाहिए।

जाति गणना की बात चली है तो जनगणना निदेशालय को यह निर्देश दिया जाना चाहिए कि वे किसी व्यक्ति को जाति का उल्लेख करने के लिए बाध्य ना करें। जहां तक धर्मांतरण की बात है सभी धर्मांतरण विषयक कानूनों को रद्द किया जाना चाहिए।

अंत में मेरी दो काव्य पंक्तियां

सीधी सी बात को हमने तो सीधे ही रख दिया।
सीधी लकीर जो टेढ़ी करे ये कसूर उसी का॥

आशाओं का नया उजाला

वल्लभ किशोर शर्मा

जैसे ही कैलेंडर की सुई दिसंबर से जनवरी की ओर घूमती है, पूरा विश्व एक नई शुरुआत का जश्न मनाता है। लेकिन भारत में, नया साल सिर्फ एक तारीख नहीं, बल्कि एक भावना है - एक ऐसा अवसर जहां हम अपनी पुरानी सोच को पीछे छोड़कर, नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़ते हैं।

'नया साल, नया सोच' यह मंत्र हमें याद दिलाता है कि जीवन में बदलाव संभव है, और यह बदलाव हमारी परंपराओं, वर्तमान चुनौतियों और आकांक्षाओं से जुड़ा होना चाहिए। आइए, इस नववर्ष पर एक रोचक यात्रा करें, जहां हम भारत की समृद्ध विरासत को छूते हुए, आज की हकीकतों पर नजर डालें और भविष्य की शुभकामनाओं से दिल को रोशन करें। यह लेख न केवल विचारों का संग्रह है, बल्कि एक प्रेरणा है- जैसे पटाखों की गूंज में छिपी खुशी, या दीये की लौ में छिपी उम्मीद।

भारत में नया साल का जश्न सदियों पुरानी परंपराओं से जुड़ा है जबकि दुनिया ग्रेगोरियन कैलेंडर के अनुसार एक जनवरी को मनाती है, वहीं हमारी संस्कृति में नववर्ष कई रूपों में आता है। उदाहरण के लिए, हिंदू नववर्ष (चैत्र शुक्ल प्रतिपदा) पर हम गुड़ी पड़वा, उगादी या बैसाखी मनाते हैं, जहां घरों को आम के पत्तों से सजाया जाता है और मीठे व्यंजन बनाए जाते हैं। दक्षिण भारत में पोंगल, पूर्व में बिहू, और उत्तर में वैशाख - हर क्षेत्र अपनी अनूठी रस्मों से नववर्ष का स्वागत करता है। ये परंपराएं हमें सिखाती हैं कि नया सोच पुराने मूल्यों से ही निकलता है।

कल्पना कीजिए, एक परिवार जो सुबह-सुबह मंदिर जाकर प्रार्थना करता है, फिर घर लौटकर पंचांग पढ़ता है और नए संकल्प लेता है। यह दृश्य कितना जीवंत है! धार्मिक भावनाओं में डूबा भारत नववर्ष को ईश्वर की कृपा के रूप में देखता है। चाहे रामनवमी हो या क्रिसमस का जश्न, हमारी बहुलता हमें सिखाती है कि विविधता में एकता है लेकिन आज की दुनिया में, ये परंपराएं सिर्फ रस्म नहीं, बल्कि एक नया सोच का आधार हैं - जहां हम पर्यावरण को बचाते हुए त्योहार मनाएं, जैसे प्लास्टिक मुक्त दीवाली या इको-फ्रेंडली होली।

आज का भारत तेजी से बदल रहा है, और नववर्ष हमें इन बदलावों पर सोचने का मौका देता है। आर्थिक रूप से, हम दुनिया की सबसे तेज बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक हैं। स्टार्टअप संस्कृति, डिजिटल इंडिया और आत्मनिर्भर भारत जैसे अभियान हमें नई सोच की ओर ले जा रहे हैं लेकिन चुनौतियां भी हैं जैसे बेरोजगारी, महंगाई और ग्रामीण-शहरी असमानता।

नववर्ष पर हम सोचें, क्या हम अपनी नौकरी में नवाचार ला सकते हैं? जैसे एक युवा उद्यमी जो स्थानीय कारीगरों को ऑनलाइन प्लेटफॉर्म से जोड़कर आर्थिक क्रांति लाता है। यह रोचक कहानी नहीं, बल्कि वास्तविकता है जैसे बनारस के बुनकरों की साड़ियां अब वैश्विक बाजार में चमक रही हैं।

सामाजिक स्तर पर, हमारी मानवीय भावनाएं हमें जोड़ती हैं। महामारी के बाद, हमने एक-दूसरे की मदद की ताकत देखी लेकिन लैंगिक असमानता, जातिगत भेदभाव और शहरीकरण की समस्याएं बनी हुई हैं। अतएव समावेशी समाज बनाएं।

कल्पना कीजिए, एक गांव जहां महिलाएं सोलर पैनल लगाकर आत्मनिर्भर बन रही हैं। यह न केवल आर्थिक, बल्कि सामाजिक क्रांति है। धार्मिक परिस्थितियां भी महत्वपूर्ण हैं, हमारी सहिष्णुता की भावना हमें एक रखती है, लेकिन विभाजनकारी ताकतें चुनौती देती हैं। नववर्ष पर हम प्रार्थना करें कि हमारी धार्मिक भावनाएं प्रेम और शांति की हों, जैसे गंगा-जमुनी तहजीब में छिपी एकता।

मानवीय दृष्टि से, भारत की युवा आबादी हमारी सबसे बड़ी ताकत है। हम सोचें पर्यावरण संरक्षण, शिक्षा सुधार और स्वास्थ्य सेवाओं में नया सोच लाएं। जैसे, एक छात्र जो प्लास्टिक रिसाइक्लिंग ऐप बनाता है, या एक डॉक्टर जो ग्रामीण इलाकों में टेलीमेडिसिन शुरू करता है। ये कहानियां रोचक हैं क्योंकि ये हमें बताती हैं कि छोटे बदलाव बड़े परिवर्तन लाते हैं।

नववर्ष को रोचक बनाने के लिए, आइए कुछ मजेदार तथ्यों और कहानियों से सजाएं। क्या आप जानते हैं कि भारत में नववर्ष की रात को लोग रेजोल्यूशन लेते हैं, लेकिन हमारी परंपरा में यह संकल्प है जैसे महाभारत में अर्जुन का संकल्प। रोचक बात दुनिया भर में नए साल पर आतिशबाजी होती है, लेकिन भारत में हम इसे दीयों और रंगोली से मनाते हैं, जो पर्यावरण के अनुकूल है। एक मजेदार कहानी एक बार एक गांव में लोग नए साल पर पेड़ लगाने का संकल्प लेते हैं, और आज वह गांव हरा-भरा जंगल बन चुका है। यह हमें सिखाता है कि नया सोच प्रकृति से जुड़ी हो। और हां, नववर्ष बिना शुभकामनाओं के अधूरा है!

मेरे ओर से व्यक्ति, परिवार और समाज के लिए शुभकामनाएं कि हम एकजुट होकर आगे बढ़ें, आर्थिक विकास तेज हो, सामाजिक न्याय मजबूत हो, और धार्मिक सद्भावना बढ़े। हमारा देश विश्व गुरु बने! धार्मिक भाव से, ईश्वर आपको आशीर्वाद दे, आपके संकल्प पूरे हों। जैसे गंगा की धारा निरंतर बहती है, वैसे ही आपकी जीवन यात्रा सुगम हो। नया साल हमें याद दिलाता है कि सोच बदलने से दुनिया बदलती है। भारत की परंपराओं को सम्मान देते हुए, वर्तमान की चुनौतियों से सीखते हुए, हम एक नए सोच के साथ आगे बढ़ें जहां आर्थिक उन्नति सामाजिक न्याय से जुड़ी हो, मानवीय भावनाएं धार्मिक सद्भाव से मजबूत हों। यह नववर्ष आपके लिए अनंत संभावनाओं का द्वार खोले।

-नरसिंहगढ़

नए साल का जश्न

नये साल का जश्न मनाया जा रहा है, बिल्डर ने अपने क्लाइंट्स को भव्य पार्टी दे रखी है। सैकड़ों लोग...धीमी रोशनी...शराब और कबाब...स्वाद कलिकाओं को तृप्त करते हुए बहु व्यंजन...। क्यों नहीं बिल्डर अपने क्लाइंट्स पर इतना खर्च करता, यही वे थे जिन्होंने उसके बनाए करोड़ों के लग्ज़री फ्लैट्स खरीदे और उसके काले धन को भी सफेद करने में मदद की।

लघुकथा/ वंदना सहाय

डिस्को लाइट्स... डांसिंग फ्लोर...मद और नशे में झूमते लोग...। बिल्डर आज घोषणा करने वाला था कि क्लाइंट्स को इस नये साल में उनके फ्लैट्स उन्हें सौंप दिए जाएँगें।

आखिरकार बिल्डर ने लोगों को फ्लैट्स सौंपने की घोषणा कर डाली। अपना घर होने की खुशी... आतिशबाजी और पटाखे !

इन्हीं जश्न मनाते लोगों से कुछ दूर बने अपार्टमेंट में , जिसके सभी फ्लैट्स क्लाइंट्स को सौंपनें की घोषणा हो रही थी, उसमें मजदूर जोगिंदर सर पर हाथ धरे जाग रहा था। इस अपार्टमेंट के एक फ्लैट में उसने पिछले चार साल गुजारे थे। जलते-बुझते डिस्को लाइट्स की तरह ही उसके दिमाग में भी ख्याल आ-जा रहे थे।

पत्नी और छः वर्षीय बेटी बगल में जमीन पर सो रहे थे। बिल्डर की घोषणा और पटाखों की आवाज से उसका दिमाग शून्य हो गया। बस, अब पत्नी और बेटी की आवाज लगातार उसके कानों में गूँजनें लगी। पत्नी का यह पूछना कि इस फ्लैट को छोड़कर निकलने के बाद हम कहाँ जाएंगे? और बेटी का बार-बार कहना कि पापा, यहाँ से मत जाओ ना। यहाँ पार्क और झूले हैं। मुझे यहाँ खेलना और झूले बहुत पसंद हैं।

-नागपुर

दोहे नये साल के

प्रो. शरद नारायण खरे

नये साल के पल नवल,खुशहाली है आज।
मंगलमय यह दौर है,चहके खूब समाज।।

नई चल रही है हवा,खुशबू के नव रंग।
आज निराशा से करे,नव आशा तो जंग।।

सूरज की तैयारियाँ,नया लिया संकल्प।
देखो अब अवसाद का,काल बहुत ही अल्प।।

नग़मे अधरों पर नये,नया बज रहा साज़।
हैं उमंग में आज सब, खुशियाँ हैं सरताज।।

नई चेतना दे रही,जग को नव आनंद।
मस्ती में अब झूमता,नर-नारी का वृंद।।

मायूसी रोने लगी,उल्लासित मुस्कान।
नया आज परिवेश है,मिला समय को मान।।

आज नया संघर्ष है,आज नवल है जोश।
उम्मीदों के दौर में,लक्ष्य आज आगोश।।

अर्जुन ने ली है शपथ, धारित नया कमान।
नया तीर है शक्तिमय, होगा नव संधान।।

धूप सुनहरी है निकट,सिद्ध आज दिनमान।
सकल विश्व की गति नवल,हर कोई बलवान।।

नये साल का आवरण,नव होने की बात।
समय बाँटता बेहिचक,जन-जन को सौगात।।

- प्राचार्य, मंडला,मप्र

डॉ. सुनीता शर्मा

नव संवेदना: नव संकल्प

व्यष्टि से समष्टि की यात्रा और आत्ममंथन का सृजन
मैं से हम तक, अनुभव से समझ तक,
भय से साहस तक—नए साल में हमारी यात्रा यही है।
पुराना साल बीत गया—
कुछ खुशियाँ पीछे छोड़ गया,
कुछ आंसू, कुछ अनुभव,
और कुछ अधूरी इच्छाएँ।
हमने उन्हें रोकने की कोशिश की,
ठीठुँरती उंगलियों से सहला कर,
पर जीवन की यही सच्चाई है—
जो बीत गया, उसे जाने देना ही
नए आरंभ की शुरुआत है।
पुराने अनुभव हमें याद दिलाते हैं—
सफलता, संतोष और सार्थकता केवल
प्रयत्न और समझ से मिलती हैं।
कहानियाँ अपने आप मुकम्मल नहीं होतीं;
सार्थक बनाना पड़ता है।
कभी भगीरथ-प्रयत्न,
विष पीकर अमृत खोजना—
यही नए साल की पहली सीख है।
बाहर से भीतर — आत्ममंथन की यात्रा
हम तेजी से बढ़ रहे हैं,
दुनिया के कोने-कोने तक पहुँच रहे हैं,
चांद-तारों और ब्रह्मांड की बातें कर रहे हैं।
लेकिन क्या हमने कभी अपने भीतर की
गलियों की आवाज़ सुनी?
क्या हमने अपने डर, अव्यक्त इच्छाएँ और खामियाँ समझी?
क्या हमने अपने भीतर के पड़ोसियों-
विचारों, भावनाओं और संकल्पों—को देखा?
नया सोच हमें पुकारता है—
दुनिया को देखकर ही हम
अपने भीतर की दुनिया समझ सकते हैं।
हम अक्सर सवालों में उलझ जाते हैं,
जैसे मृग मरीचिका में भटकते हैं—
पर यही सवाल हमें भीतर की गहराई तक ले जाते हैं।
छोटे दृश्य, बड़े अर्थ
सड़क की रोशनी में पड़ोस की हँसी ने
हमें रुकने पर मजबूर किया।
सूखी धूप में पत्तियों का झुरमुट
बीते साल की याद दिला रहा था।
बारिश की बूँदें कागज़ पर गिरकर
बीते अनुभवों की कहानियाँ सुना रही थीं।
ये दृश्य केवल दृश्य नहीं, वे हमारी जागरूकता
और समझ की दिशा दिखाते हैं।
सच्ची समझ छोटे-छोटे क्षणों से जन्म लेती है।
<u>कहानियों का प्रयत्न और सार्थकता</u>
एक कहानी अधूरी रह गई थी,
उसमें जीवन का शोर और आत्मा की आवाज़ भरनी थी।
कभी भगीरथ-प्रयत्न, कभी विष पीकर अमृत खोजना—
यही कहानियों को मुकम्मल बनाता है।
हमारा प्रयास ही उन्हें सार्थक बनाता है।
कहानियाँ केवल लिखने से नहीं,
अनुभव करने, समझने और साझा करने से मुकम्मल होती हैं।
<u>नए सवाल और नए उत्तर</u>
नया साल नए प्रश्न लेकर आता है—
हम कौन हैं?
हमारी सोच की सीमाएँ कहाँ तक हैं?
हमारे निर्णय और संवेदनाएँ हमें क्या बता रही हैं?
क्या हम अपने भीतर के डर और
भ्रम का सामना कर पा रहे हैं?
इन सवालों का उत्तर केवल मैं में नहीं,
हम में छिपा है।
व्यष्टि से समष्टि, व्यक्तिगत अनुभव से सामूहिक समझ—
यही नए साल की सबसे गहन सीख है।
<u>संकल्प — नया सोच</u>
इस नए साल पर हम संकल्प लें—
*बाहर की दुनिया को केवल देखने का नहीं,
समझने का है।
*अपने भीतर की भावनाओं और विचारों में
सजग और संवेदनशील रहने का।
*पुराने भय, भ्रम और सीमाओं को पीछे छोड़ने का।
*अनुभवों से भीतर की रोशनी खोजने का।
*मैं से हम की यात्रा जारी रखने का।
*समाज, परिवेश और लोगों की धड़कन समझने का।
*अपनी कहानियों और अनुभवों को
सार्थक बनाने और साझा करने का।
अब-
पुराना साल गया, नई सुबह आई—
और हम खड़े हैं, अपने भीतर की रोशनी को
पहचानने के लिए।
हर सवाल अब हमें डराए नहीं,
बल्कि हमारी ताकत बने हैं।
हर अनुभव, हर आंसू, हर खुशी
हमारे नए संकल्प की नींव है।
नया साल केवल तारीख का परिवर्तन नहीं है
यह सोच, दृष्टिकोण और आत्मा की नई यात्रा है।
हम अब मैं नहीं, हम हैं
अपने अनुभवों से सीखकर,
अपने सवालों से समझकर,
और अपने संकल्पों से नए रास्ते बनाकर।
<u>निष्कर्ष-</u>
इस नए साल में हम
अपने भीतर की दुनिया को बाहर लाएंगे,
अपने भीतर की समझ से
समाज और जीवन को नया अर्थ देंगे।
यह हमारी यात्रा है—
सचेत, संवेदनशील और संकल्पित।

-ऑस्ट्रेलिया (मेलबॉर्न)

अपने विचारों को फिर से रोपने का समय

सरिता गर्ग 'सरि'

नया साल केवल कैलेंडर के पन्ने पलटने की क्रिया भर नहीं है; यह समय का वह ठहराव है जहाँ मन अपने भीतर झाँककर यह परखता है कि अब तक जो जिया गया, वह हमारे भीतर क्या बनकर ठहरा है और आगे जो जिया जाएगा, वह किस रूप में हमारे भीतर आकार लेना चाहता है।

हम अक्सर यह मान लेते हैं कि परिवर्तन बाहरी परिस्थितियों से पैदा होता है, जबकि सच यह है कि हर बड़ा बदलाव मन की मिट्टी में सबसे पहले अंकुरित होता है। नया साल उसी भूमि को एक नई नमी देकर कहता है—अब उठो, अपने विचारों को फिर से रोप दो।''

साल के बदलने में कोई जादू नहीं; जादू तो सोच के बदलने में है और सोच तभी बदलती है जब हम स्वयं को बदलने का साहस जुटाते हैं।

समय का यह पड़ाव हमें कहीं न कहीं यह भी समझाता है कि बीते वर्ष की सफलताओं और असफलताओं का बोझ साथ ले जाना नदी के जल को मुट्ठियों में कैद करने जैसा है—जिसे हम जितना कसकर पकड़ते हैं, वह उतनी ही तेजी से फिसलता जाता है। नया साल हमें यह कला सिखाता है कि हर फिसलते हुए क्षण को एक अनुभव की तरह स्वीकार कर लें और उस अनुभव को अपने भीतर एक शांत बुद्धि की तरह बसने दें।

नई सोच का अर्थ यह नहीं कि हम पुरानी स्मृतियों को अस्वीकार कर दें, बल्कि यह कि हम उन्हें एक नई व्याख्या दें। स्वयं को उसी अतीत के एक अधिक समझदार पाठक के रूप में देख सकें।

कभी-कभी मन को लगता है कि बदलाव केवल बड़े कदम उठाने से होगा, लेकिन कई बार जीवन की दिशा वे छोटे, चुपचाप किए गए निर्णय बदल देते हैं, जिनके बारे में हम किसी को बताना भी आवश्यक नहीं समझते। जैसे किसी सुबह थोड़ी देर पहले उठना,किसी को अनावश्यक उत्तर न देना,

किसी तीखी प्रतिक्रिया को निगल लेना,किसी नई सीख को मन में जगह देना, किसी विफलता के तिल को हटा देना।

नई सोच इन छोटे-छोटे सुधारों में ही अपना असली विस्तार पाती है।

धैर्य, संयम, सादगी और जागृति—ये वे शब्द हैं जो किसी बड़े भाषण में भले साधारण लगें, पर जीवन के सबसे कठिन मोड़ इन्हीं से निकला करते हैं।

नए साल का प्रवेश हमें यह भी याद दिलाता है कि मानव होने का अर्थ केवल जीना नहीं, बल्कि बेहतर बनना भी है। हर वर्ष हम अनजाने में अपने भीतर एक नया स्वर तैयार करते हैं—कुछ गहरा, कुछ व्यापक। एक नया साल हमें उस स्वर को सुनने के लिए एक शांत कोना दे देता है। हम अपने भीतर के शोर को थोड़ी देर के लिए विराम देकर सोच पाते हैं कि हम किस दिशा में बहना चाहते हैं।

नई सोच मनुष्य को भीतर से हल्का भी बनाती है। जो व्यक्ति स्वयं के भीतर स्पष्ट होता है, वह दुनिया के किसी भी कोलाहल में अपने रास्ते पहचान लेता है और जिसे रास्ते पहचानने का हुनर मिल जाए, उसे आगे बढ़ने से कोई रोक नहीं सकता,न समय, न परिस्थितियाँ, न लोग।

नया साल एक दर्पण भी है और एक दीपक भी,दर्पण इसलिए कि वह हमें हमारा वास्तविक चेहरा दिखाता है, और दीपक इसलिए कि वह आगे बढ़ने की रोशनी जगाता है। हम इनमें से किस ओर अधिक ध्यान देते हैं, वही हमारे वर्ष का स्वरूप तय करता है।

नई सोच का सबसे सुंदर पक्ष यह है कि यह किसी बाहरी नियम के अधीन नहीं होती। यह किसी पन्ने पर लिखी प्रतिज्ञा नहीं, किसी डायरी में बंद वाक्य नहीं, न किसी मंच से किए भाषण की प्रतिध्वनि। नई सोच वही है जो चुपचाप हमारे व्यवहार में उतरती है,जिसका पता हमें भी तब लगता है, जब हम किसी पुराने क्षण को याद कर यह महसूस करते हैं कि अरे, पहले ऐसे प्रतिक्रिया देता था, अब वैसा नहीं करता।

यही मनुष्य के भीतर की अनदेखी, कोमल प्रगति है। इसे कोई तालियाँ नहीं मिलतीं, पर जीवन का बड़ा सौंदर्य इन्हीं मौन परिवर्तनों में बसता है।

नए साल की प्रार्थना यहीं पूरी होती है कि हम स्वयं से नाराज़ होने के बजाय स्वयं को समझने लगें, दूसरों पर दोष देने के बजाय अपनी सीमाओं को पहचानें,छोटे क्षणों को यूँ ही न गँवाकर उनमें अर्थ तलाशें।

जीवन हमें कोई बड़ा उपहार तभी देता है जब हम उसकी सूक्ष्मताओं को देखने लगते हैं।

नया साल एक बाहरी घटना है,पर नई सोच एक आंतरिक उत्सव और मन का उत्सव वही है जहाँ आत्मा थोड़ी और विस्तृत हो जाए,स्वभाव थोड़ा और कोमल हो जाए और दृष्टि दुनिया को थोड़ा और मानवीय रूप में देखने लगे।

आखिर में यही कहना पर्याप्त है—

समय चाहे बदले या न बदले, लेकिन यदि सोच बदल गई तो पूरा जीवन नई रोशनी से दीप्त हो सकता है।

नया साल केवल तारीखों का नहीं,

आत्मा के जागरण का पर्व है—

जहाँ हम स्वयं को उसी रूप में फिर से गढ़ते हैं जिसे हम भीतर से सबसे सच्चा, सबसे शांत, और सबसे सार्थक मानते हैं।

-भिवाड़ी (राजस्थान)

पहले अपने भीतर की दुनिया को बदलें

डॉ. कविता मल्होत्रा

सदियों ने कैलेंडर के पन्ने पलटे हैं
विस्तृत प्रकृति के पृष्ठ युगों में सिमटे हैं
तकनीकी विकास का हर ओर बोलबाला है
उन्नति यथार्थ से कोसों दूर हर ओर घोटाला है

मानव जाति का समग्र विकास और मानव कल्याण ही ब्रह्माण्ड का मक़सद है। शिक्षा का उद्देश्य जागरूकता लाना हो वैश्विक स्तर पर इस जागृति की आवश्यकता है कि शिक्षकों और विद्यालयों का लक्ष्य विद्यार्थियों को सिर्फ़ अंक गणना की प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान की प्राप्ति के लिए ही नहीं, अपितु ज्ञानार्जन के लिए मेहनत करने की प्रेरणा देने का हो, तभी एक जागरूक समाज का निर्माण संभव होगा।

केवल अपने स्वार्थ के लिए संसाधनों का दुरूपयोग मानव जाति के पतन का मुख्य कारण है। ये तकनीक और वैज्ञानिक उन्नति का ही तो परिणाम है जिसने देश के उच्च शिक्षित वर्ग को बारूद बनाने का ज्ञान दिया, लेकिन यदि व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का अवलोकन किया जाए तो ये निष्कर्ष निकलता है कि ये आध्यात्मिक ज्ञान का ह्रास ही है जो मानवता को शर्मसार करता है।

वास्तविकता तो ये है कि व्यक्ति समाज का एक छोटा सा हिस्सा है,न कि उसका केंद्र। ईश्वर से मिली प्रत्येक संपदा को अपने सानिध्य में आने वाले सभी लोगों के साथ साझा करते हुए, पशु-पक्षियों और पर्यावरण को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से उठाया गया हर कदम एक जागरूक नागरिक का दायित्व है।जब तक हर जीव के प्रति दयालुता का भाव नहीं होगा तब तक हम एक हैं का नारा बुलंद नहीं हो सकता।

व्यक्तिगत लाभ के लिए सार्वजनिक व्यवस्था को बिगाड़ कर नियमों का उल्लंघन करना तो एक आम समस्या बन चुकी है। सत्यनिष्ठा और विनम्रता समाज से दूर होती जा रही है, इस गंभीर स्थिति में हम आने वाली पीढ़ियों से क्या उम्मीद रख सकते हैं।किसी भी राष्ट्र का भविष्य नई पीढ़ी में निहित है, इसलिए नयी पीढ़ी के लिए सामूहिक चेतना के उत्थान का मार्ग प्रशस्त करना नये साल का नया संकल्प होगा तो राष्ट्र वास्तविक प्रगति की ओर अग्रसर होगा। योग्यता के आधार पर अच्छे नागरिकों का निर्माण एक जागरूक राष्ट्र के लिए सबसे शक्तिशाली उपकरण साबित होगा।

नया साल एक संकल्प है, जिसमें एक जागरूक नागरिक बाहर की दुनिया को बदलने से पहले, अपने भीतर की दुनिया को बदलेगा । जब हर नागरिक अपनी चेतना को ऊपर उठाएगा तब ही सच्चे अर्थों में रामराज्य की स्थापना संभव हो पाएगी।यह आध्यात्मिक सोच केवल चिंतन तक सीमित न रहे बल्कि दैनिक दिनचर्या में नागरिक जीवन में परिलक्षित हो, इसके लिए ये जरूरी है कि आने वाले नए साल में हम आध्यात्मिकता को केवल पूजापाठ तक सीमित न रखकर उसे अपने जीवन में नागरिक जागरूकता का एक अभिन्न अंग बनाएं।

केवल अपने अधिकारों और लाभ पर केंद्रित समाज भ्रष्टाचार को ही बढ़ावा देता है, लेकिन आध्यात्मिक दृष्टिकोण व्यक्ति को मैं से हम तक के विस्तार की यात्रा करवा के मानव जीवन की यात्रा को तीर्थ यात्रा में रूपांतरित कर देता है। श्रीमद्भागवत गीता में समाहित निष्काम कर्म का सिद्धान्त संपूर्ण मानव जाति के लिए सबसे बड़ा आध्यात्मिक ज्ञान है। हम सब एक ही चेतना के अँश हैं – यही अद्वैत का बोध है, जो प्रतिस्पर्धा से हटाकर मनुष्य को परस्पर सहयोग और करूणा की ओर खींचता है। एक नागरिक की जागरूकता तभी पूर्ण होगी जब वह बाहरी दुनिया में विकास के साथ-साथ अपनी आंतरिक शक्ति के उत्थान के प्रति भी सजग होगा। मानव जाति को जीवनयापन के लिए मिले संसाधन समाज की साझी विरासत है, अपनी भावी पीढ़ी में जीवन मूल्यों का विस्तार कर के ही एक जागरूक समाज का निर्माण संभव है।तो आइए इस नए साल में नये संकल्प के साथ कदम बढाएँ और मैं से हम तक की यात्रा तय करके अपने जीवन की यात्रा को तीर्थ यात्रा बनाएँ।

-नई दिल्ली

नये साल में कीजिए...

दोहे/ राजीव नामदेव 'राना लिधौरी'

भोर सुहानी आ गयी ,
छोड़ो कल की बात।
नये साल सबको मिले,
खुशियों की सौगात।।

लोग गरीबी दूर हो,
बीमारी का नाश।
मान मिले सम्मान भी,
लक्ष्मी आये पास।।

नये साल में कीजिए,
कुछ मानव कल्याण।
पोधारोपण भी करो,
देते हैं जो प्राण।।

नये साल में कीजिए,
नया सृजन साकार।
इक,दो पुस्तक भी छपे,
कविता लिखो हज़ार।।

– टीकमगढ़

नए अनुसंधान करें

जीवन चलने का नाम हैं, दिन,महीनों साल आते-जाते रहते हैं। बात सोचने वाली यें है कि हमने अपने बीते जीवन से क्या पाया और क्या खोया! प्रश्न यही पर खड़ा होता है ।

राजकुमारी चौकसे 'प्रेरणा'

जीवन एक यज्ञ शाला हैं,और हर पल-पल घटती सासें आहूति है, मिला दो इसमें खुशबू सदविचारों की सत्कर्मो की और महकादो जीवन परोपकार से।

यही सोच नया साल नई सोच को पल्लवित-पुष्पित करनें में मील का पत्थर बन अपने-आप को तों गौरवान्वित करेंगें ही आने वाली पीढ़ी के लिए भी महत्वपूर्ण भूमिका निभानें में सफल होगें।

ऊंचे सपने तो जरूर देखे,लेकिन उन्हें किर्यान्वित करने के लिए दृण संकल्पित होना भी अति आवश्यक हैं।

आज कृत्रिम उपक्रम का युग है। इसलिए हर कार्य को शीघ्र से शीघ्र करना चाहते हैं लेकिन किसी भी कार्य को अंजाम देने से पहले उस पर चिंतन मनन करना अति आवश्यक है।

आज हमारे देश ने बहुत तरक्की की हैं। यह हमारे कठिन परिश्रम व लगन का ही प्रतिफल है। जब हम किसी भी उपलब्धि को अपनी मेहनत से प्राप्त करते है, तो वह चिरस्थाई हो जाती है।

आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता- ए आई का जमाना आ गया है लेकिन फिर भी उसमें स्थायित्व नहीं है। आसान तो हर कार्य हो जावेगा, लेकिन जीवन रुपी विरासत में ग्रहण लगने लगेगा। शरीर मेहनत करने से घबराकर अपने-आप को दूसरे पर निर्भर रहकर खुद एक मशीन बनने जा रहा है। कहने का तात्पर्य यह है कि नये वर्ष में अपनें अनुसंधान को बढायें, नई-नई खोज भी करें, डिजिटल तकनीक को आगे बढायें लेकिन अपनी जमीन से अवश्य जुडे रहे। जो बीत गया है उस पर चिंतन और आने वाले समय की रुप रेखा अवश्य अपनें हृदय रुपी पटल पर अंकित कर समाज हित में नि:स्वार्थ भाव से कार्यरत रहना चाहिए।

मानव तन अनमोल रत्न है
व्यर्थ ना इसे गवाना हैं
सुरत तो सीरत में बसती
यही सही खजाना हैं।

नया साल नई उमंगो से भरा होना चाहिए,पारिवारिक एकता, प्रेम भाव आध्यात्मिक ज्ञान,नि:स्वार्थ कर्म हमारे जीवन के महत्वपूर्ण अंग होते है जो जीवन नैया को सुरक्षित चलानें के महाप्रबंधक सूत्र हैं। नया वर्ष नई उम्मीदों के साथ-साथ सभी को शुभदायक, मंगलदायक हो। निर्दलीय प्रकाशन के देश-विदेश स्थित सभी पाठकों और सहयोगियों को इसी शुभकामनाओं के साथ बहुत बहुत बधाई ।

-भोपाल म.प्र

नव वर्ष में नव रूप सजे

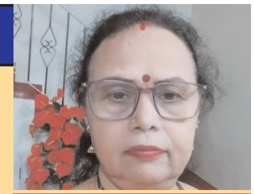

शशिप्रभा शाक्य 'शशि'

नई उमंग है नया जोश है,
और साथ है नया वर्ष।
नए विचारों से कर डालें,
सब मिलकर सर्वत्र उत्कर्ष ।

नया वर्ष प्रतिवर्ष है आता,
इसमें कुछ भी नया नहीं है।
जब तक हमारा मन न बदले,
तो मन से कुछ गया नहीं है।

मन में सेवा का भाव रहे और
परस्पर प्रेम भी बना रहे।
दया और करुणा हो मन में,
परोपकार भी सदा रहे।

ईर्ष्या,द्वेष और लोभ, मोह से,
सदा- सदा की दूरी हो।
कोई किसी का हक न छीने,
चाहे कैसी भी मजबूरी हो।

नए वर्ष में नया शगुन हो,
सोच भी सर्वथा नई-नई हो।
परंपराओं का भी मान रखें जो,
सबके लिए उपयोगी हो।

रीति रिवाजों को भी मानें,
और उनका सम्मान करें।
नई सोच में शामिल करके,
उन पर सदा अभिमान करें।

मात पिता की सेवा हो और,
उनको सदा सम्मान मिले।
भाई -बहन के रिश्तों जैसा,
हर रिश्ते को मान मिले।

दीन- दुखी के दुख बाटें और,
और उनका भी सहयोग करें।
जितना बन जाए हम सबसे,
खुशियों में उनकी योग करें ।

कथनी और करनी में अपनी,
अंतर कोई शेष ना हो।
अपनी कोशिश और परिश्रम,
में भी अब प्रतिरोध ना हो ।

नए वर्ष के नए गीत अब,
उपजें अपने अंतर्मन से।
नए विचारों से पूरित हो,
सजें सभी तन, मन, धन से।

- अवधपुरी, भोपाल

हवा नई ले निकले सूरज

कृष्ण देव चतुर्वेदी

उत्सव धर्मी देश भारत की एक बड़ी विशेषता यह है कि यहां का प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह किसान हो, मजदूर हो, चरवाहा हो, या किसी बड़े पद पर कार्यरत पदाधिकारी हो, सभी में एक विशेष प्रकार की चिंतन-शैली से वह आदि से अंत - पर्यंत सदैव ऊर्जावान बना रहता है।

हमारे देश में प्रत्येक दिन सोम मंगल से आरंभ होकर रविवार तक विशेष पर्वों की भांति पूजे जाते हैं अर्थात अपने संज्ञा के अनुसार, इष्ट देवों के अनुसार, वैज्ञानिक तथ्यों के अनुसार, व्यवहारित है। समाज के द्वारा किया जाने वाला यह व्यवहार-कृत्य मात्र काल्पनिक नहीं है बल्कि इसमें वैज्ञानिक तत्व छुपे हुए हैं! चुकी भारत के ज्योतिष ग्रंथों के अनुसार नक्षत्र एवं तारामंडल इस पृथ्वी के इर्द-गिर्द गतिमान है तथा एक दूसरे को अपने आकर्षण शक्ति से आकर्षित करते रहते जिनका प्रभाव इस पृथ्वी पर एवं पृथ्वी के प्रत्येक जीव और जैव को प्रभावित करते हैं। यही कारण है कि भारतीय पंचांग अपने समय के अनुसार वर्ष में कई बार नव वर्ष का आयोजन करते हैं।

कुछ लोग चैत्र में नव वर्ष मानते हैं तो कुछ लोग दीपावली के आसपास नव वर्ष का आरंभ मानते हैं। इसी तरह प्रत्येक प्रांत में प्रचलित पंचांगों के अनुसार विभिन्न प्रकार के नव वर्ष के आयोजनों का दिखाई पड़ना हमारे नए सोच का स्त्रोत है। मैंने नववर्षागमन की बेला में एक कविता का सृजन किया जो इस प्रकार है-

नये साल की सोच नई हो, आदिकाल की बात।
नई हवा ले निकले सूरज, भूले बीती बात॥
सूर कबीर सभी ने बोला, होते शुभ त्योहार।
तपते मेघ जगत को देते, पावन मन बरसात॥

ग्रोगेरियन / अंतराष्ट्रीय वर्ष दिसंबर २०२५ की अवसान बेला और जनवरी २०२६ के आगमन का स्वागत संपूर्ण विश्व में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। उन सभी तरीकों में भारतीय तरीका थोड़ा अलग और भिन्न होता है। हालांकि वर्तमान में कहे जाने वाले जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के नई दिल्ली स्थित परिसर में सोच पाश्चात्य रंग में रंगी दिखाई पड़ती है।

तेज आवाज में बजने वाले संगीत पर मद भरे मन से नृत्य करना शोर करना या सड़क पर तेज रफ्तार से गाड़ियों को चलाना अपना शौक मानते हैं जो हमारे देश के सभ्यता संस्कृति के अनुसार उचित नहीं मानी जाती। हमें अर्जुन आरुणि , ध्रुव प्रहलाद और धौम्य के समान शालीन शिक्षा का दर्शन मिलता है। हमारे यह श्रेष्ठ पात्र हमारे समाज के हमारी संस्कृति के और हमारे व्यवहार के प्रतीक हैं, आदर्श है। हम समय-समय पर अपने बच्चों को, विद्यार्थियों को, और व्यवहार को उनके नाम की दृष्टांतांत से उत्साहित करते हैं। मैंने भी इस उत्सव धर्मिता को एक दोहे में इस प्रकार कहा है-

करते अपना धर्म सब, नई सोच के साथ।
वैदिक भाषा भाव यह, उन्नत रहता माथ॥

हमारे भोपाल शहर के प्रसिद्ध कवि प्रदीप नारायण प्रदीप जो कला मंदिर भोपाल के संस्थापक रहें हैं,ने अपनी एक कविता में लिखा-

कलम के धनी हो कलम फिर उठाओ।
जो सोए हुए हैं उन्हें फिर जगाओ॥
नया साल आया, नया भाव लाओ।
मगनता बढ़ाओ नया..... गीत गाओ॥

इस नए वर्ष २०२६ में सभी अक्षर सैनिकों को एक संकल्प करना चाहिए कि साक्षरता के लिए साला त्यागी बालिकाएं, जो छोटे-छोटे गांव की गलियों में बेगार करती हुई दिखाई पड़ती है, या या शहरों में सड़कों के आसपास पनिया बिनती हुई दिखाई पड़ती है को स्कूलों में भेज कर उन्हें पढ़ाया जाए और सक्षम बनाया जाए। अभी हाल ही में लिखी अपनी कविता में किसी कवि ने ऐसी ही एक बेटी की पुकार को इस प्रकार व्यक्त किया है-

अंधकार की काट बेड़ियां, मैं उजियारा लाऊं!
मेरा भी अब मन करता है मैं भी शाला जाऊं॥

-भोपाल

मधुबाला पांडे

नव वर्ष गीत

आशाओं के दीप जला के,
मै नव वर्ष गीत लिखती हूं
कल्पनाओं की सरगम से
जीवन का संगीत रचती हूं

नवयुग आया मन हरशाया,
अपना हक जन जन ने पाया,
नवप्रकाश से जगमग जग है,
अधरों पे नवमुस्कान भरती हूं
मै नव वर्ष गीत...

नया सवेरा नई उमंगें,
नए लक्ष्य हैं नई तरंगें
एक नया भारत है ये अब
जिसमें मैं रहती हूं ,,
आशाओं के दीप जला के
मै नव वर्ष गीत लिखती हूं -भोपाल

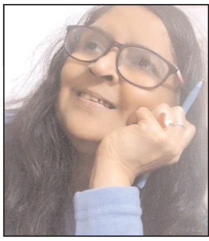

नए इरादों के जागरण का समय

चंचलिका शर्मा

हम सभी जानते हैं पुराने साल से नये साल में कदम रखने का सबसे प्रचलित और कायम उदाहरण कैलेंडर है जिससे हम क्रमशः दिन, महीने, साल की गणना करते हैं। ऐतिहासिक रूप से प्रमाणित और सूत्रबद्ध पहले कैलेंडर कांस्य युग के हैं, जो प्राचीन निकट पूर्व में लेखन के विकास पर आधारित हैं ।

अंग्रेजी मान्यताओं के आधार पर बारह महीने जनवरी से दिसम्बर तक का होता है। एक साल को दिन, सप्ताह, महीने, साल में बांटा गया है अर्थात एक वर्ष में ३६५/३६६ दिन होते हैं।

कैलेंडर के पन्ने पलटते पलटते जाने कब पुराना साल बीत कर नया साल आता है, या यूँ कह सकते हैं हम , पुराने साल के खट्टे मीठे यादों को विसर्जन देकर नयी उम्मीदों के सपनों को आँखों में सजाये नव वर्ष का वरण करते हैं। खट्टी यादें अक्सर पीड़ा दायक होती हैं जिसके साथ हर किसी को कहीं न कहीं, किसी न किसी तरह जूझना, निपटना पड़ता है। मगर हर कोई जानता है कि समय का चक्र घूमता रहता है यही वजह है कि इंसान कई बार प्रकृति के निर्णय के आगे खुद को हवाले कर देता है, क्योंकि प्रकृति के साथ साल का जुड़े रहना प्रकृति का ही नियम है।

जब हम पीछे की ओर मुड़कर देखते हैं तो पुराने सालों, उससे भी पुराने सालों में कई कुप्रथाएं, कुसंस्कार, स्त्री निरक्षरता, बेरोजगारी की वजह से पैसे की तंगी, दहेज प्रथा आदि कई प्रताड़नाएं देखने को मिलते थे/ हैं।

साल दर साल आगे बढ़ते, नये साल का वरण करते करते समाज में, लोगों के जीवन में बहुत परिवर्तन देखने को मिलते चले गये। जब हम नये साल में कदम रखते हैं तो नये खूवाबों को आँखों में लिए होते हैं। ये सपने सिर्फ़ अपने लिए ही नहीं पूरे देश के सुख - समृद्धि के लिए होते हैं।

सरकार द्वारा सभी के शिक्षा, ख़ासकर स्त्रियों की आत्मनिर्भरता पर ज़ोर देना सकारात्मकता का बोध कराता है। नये वर्ष में सबकी निराशा दूर करके आशा की ज्योति जलाने की बीड़ा उठानी होगी।

हमारे देश में कई समस्याएं चल चल रही है। घुसपैठिये को दूर भगाने, हमारे देश पर हो रहे आतंकवादियों का संहार जरूरी है। जाति भेद दूर होना जरूरी है। नये साल में सबके दिलों पर बस एक ही बोल, अपने कृति से दर्शाना होगा कि भारत देश हमारा हैं, हम भारत के नागरिक हैं। नये वर्ष में भारतीय एकता का होना जरूरी है। सबके घर चुल्हे जलने होंगे। दूषित हो रहे पर्यावरण के प्रति हर एक को जागरूक होना अनिवार्य होने होंगे। बेरोजगारी दूर होनी होगी। हमारे किसानों को उनके मेहनताना के लिए उन्हें उनकी जरुरतों को पूरी करनी होगी।

नव वर्ष का आवागमन इस तरह हो कि हर इंसान एक बीज बोये, एक पेड़ उगाने के लिए खुद से वादा करे। हर एक को स्वच्छता अभियान के प्रति जागरूक होना ही पड़ेगा। तभी आने वाले हर नव वर्ष में भारत देश धन- धान्य से पूर्ण, साक्षरता से पूर्ण होगा। फिर से लोग कहेंगे हमारा भारत फिर से सोने का भारत बन जायेगा।

पुराने साल को
हम अलविदा कहते हैं
नये साल में ,
नये इरादों को जगाते हैं
तीन सौ पैंसठ दिन
स्वच्छ और सुंदर रहे
नये साल में खुशियों
की दुनिया बसाते हैं..

-वडोदरा, गुजरात

नव वर्ष मनाइए

देवेन्द्र थापक

हमारा,सुखद राष्ट हो,
यह भावना अपनाईये।
फिर सभी के साथ मिलकर
नव वर्ष मनाईये ।।
हर धर्म, हर समुदाय से,
वैमनस्यता मिटाईये।
फिर सभी के साथ मिलकर,
नव वर्ष मनाईये ।।
हर भारतीय में, देश भक्ति हो।
यह समर्पण लाईये।
फिर सभी के साथ मिलकर
नव वर्ष मनाईये ।।
घूसखोर, रिश्वतखोर, मक्कारों की,
गिरफ्तारी करवाईये।
फिर सभी के साथ मिलकर
नव वर्ष मनाईये ।।
माता-पिता, बहिन, बेटियों को,
देश में सम्मान दिलवाईये।
फिर सभी के साथ मिलकर
नव वर्ष मनाईये ।।
इस धरा का ऋण चुकाने,
हमारा पर्यावरण बचाईये।
फिर सभी के साथ मिलकर
नव वर्ष मनाईये ।।
ये राष्ट्र हमारा, हम सभी भारतीय हैं।
यही संकल्प अपनाईये।
फिर सभी के साथ मिलकर
नव वर्ष मनाईये ।।
अब, यही स्वच्छ विचारधारा,
यहीं नई सोच अपनाईये।
फिर सभी के साथ मिलकर
नव वर्ष मनाईये ।।

-भोपाल

कैसे मनाएं नव वर्ष की खुशियाँ!

मनोरमा पंत

अपनी बात कहने के पूर्व मैं सुप्रसिद्ध कवि हरिवंश राय बच्चन की नववर्ष पर सृजित कविता का उल्लेख करना चाहूंगी जिसका शीर्षक है 'आओ, नूतन वर्ष मना लें' । जरा गौर फरमाए कविता पर –

गृह-विहीन बन वन प्रयास का
तम आँसुओं का ,तप्त श्वांस का ,
एक और युग बीत रहा है
इस पर हर्ष मना ले !
आओ, नूतन वर्ष मना ले !

उठो,मिटा दें आशाओं को
दबी दबी अभिलाषाओं को
आओ,निर्ममता से उर में
यह अंतिम वर्ष मना लें !
आओ,नूतन वर्ष मना ले !

हुई बहुत दिन आँख मिचौनी
बात यही थी निश्चित होनी
आओ,सदा दुःखी रहने का
जीवन में आदर्श बना ले !
आओ,नूतन वर्ष मना ले!

कितने भारी मन से लिखी होगी कवि ने यह कविता ! दुःख और हताशा से गढे गये हैं इसके शब्द। आज भी पूरे विश्व में हताशा और बैचेनी है । आधी से अधिक दुनिया में युद्ध लड़े जा रहे हैं ,हजारों लाखों की संख्या में निरपराध लोग मारे जा रहे हैं ।बलात्कार की घटनाएं उत्तरोत्तर बढ रही हैं । लाखों की संख्या में विस्थापित दयनीय जीवन व्यतीत कर रहे हैं। इन अमानवीय दशाओं में नये वर्ष का स्वागत अधूरे मन से होगा।

हर बार ३६५ दिन व्यतीत होने पर नया वर्ष आता है । आम आदमी यह सोचता ही रह जाता है कि चलो, पिछला वर्ष में जो बुरा हुआ उसे भूल जाए । वह आशा करता है कि नवीन वर्ष नई उमंग,नई उम्मीद लेकर आएगा। इसी सोच से वह नये वर्ष का अभिनन्दन करता है।

भारत जैसा कृषि प्रधान देश प्रौद्योगिकी में छंलागे भर रहा है ,यह बहुत गौरव की बात है चहुंओर विकास हो रहा है पर इस विकास की कीमत हमारे देश के पहाड़ और नदियां चुका रहे हैं। सबसे बड़ी कीमत हिमालय चुका रहा है। तीर्थस्थलों तक सुगम पहुँच के लिए बनती सड़कों के जाल ने उसका भाल तोड़ दिया है । वहाँ के जंगल नष्ट हो रहे हैं । विनाश कारी बाढे आ रही हैं, भूसंख्लन की सख्या में इजाफा होता जा रहा है ।

हाल ही में एक सर्वेक्षण में दुनियाभर के ५५ प्रतिशत लोग बीते दिन याने १९७५ के दिनों को आज से बेहतर मानते हैं और उनका कहना है कि उस दौर में लोग ज्यादा खुश थे । ऐसा क्यों ? विगत वर्षों में महंगाई, युद्ध महामारी और प्राकृतिक आपदाओं के कारण वे अपने आप को असुरक्षित पाते हैं । सुविधाओं में बढोतरी से लोगों का जीवन स्तर बढा है परदुनिया तथ्यों से नहीं, अपनी भावनाओं से तय कर रही है कि ५० वर्ष में लोग अधिक खुश और सुखी थे।

आज पूरे विश्व में खतरनाक जलवायु परिवर्तन हो रहा है,जिसकी चपेट में भारत भी आया है । जलवायु विषम होती जा रही है ,जिससे लोग त्रस्त हैं ।भारत भी इससे अछूता नहीं है।

नये वर्ष में तापमान को नियंत्रित करने में प्रत्येक भारतवासी को भी जुटना होगा ।गरीबी ,अशिक्षा जैसी समस्याओं से लड़ाई चिर काल से होती आई है तो नये वर्ष में इनके उन्मूलन में हम सहयोग करें ? सर्वेश्वरदयाल की 'नये साल की शुभकामनाएं' नामक कविता के अंशों से मैं अपनी बात समाप्त करती हूँ –

नए साल की शुभकामनाएँ!

खेतों की मेड़ों पर
धूल भरे पाँव को
कुहरे में लिपटे
उस छोटे से गाँव को
नए साल की शुभकामनाएं!
जाँते के गीतों को,
बैलों की चाल को
करघे को कोल्हू को
मछुओं के जाल को
नये साल की शुभकामनाएं!

– भोपाल

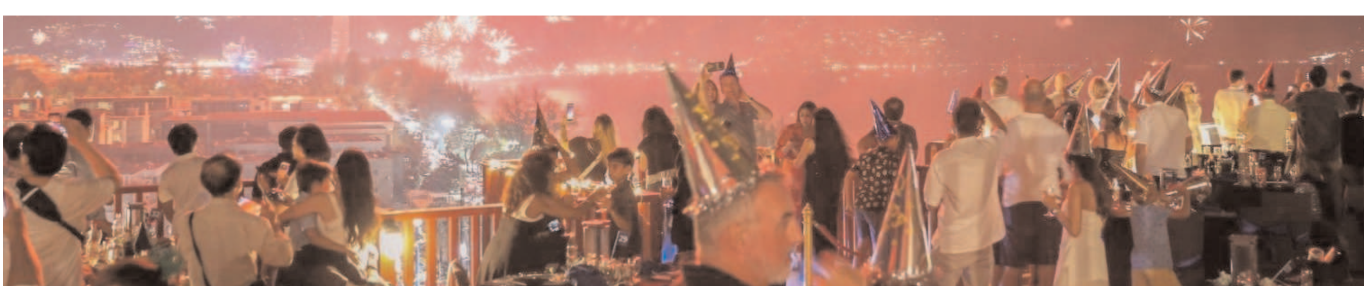

सकारात्मक सोच और नव निर्माण का संकल्प

मनोज चतुर्वेदी 'आनंद'

नव वर्ष या नया साल एक उत्सव की तरह पूरे विश्व में अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग तिथियों तथा विधियों से मनाया जाता है। विभिन्न सम्प्रदायों के नव वर्ष समारोह भिन्न-भिन्न होते हैं और इसके महत्व की भी विभिन्न संस्कृतियों में परस्पर भिन्नता है।

नव वर्ष उत्सव ४,००० वर्ष पहले से बेबीलोन में मनाया जाता था लेकिन उस समय नए वर्ष का ये त्यौहार २१ मार्च को मनाया जाता था जो कि वसंत के आगमन की तिथि भी मानी जाती थी। प्राचीन रोम में भी नव वर्षोत्सव के लिए चुनी गई थी। रोम के शासक जूलियस सीजर ने ईसा पूर्व ४५वें वर्ष में जब जूलियन कैलेंडर की स्थापना की, उस समय विश्व में पहली बार एक जनवरी को नए वर्ष का उत्सव मनाया गया। ऐसा करने के लिए जूलियस सीजर को पिछला वर्ष, यानि, ईसापूर्व ४६ इस्वी को ४४५ दिनों का करना पड़ा था। हिब्रू मान्यताओं के अनुसार भगवान द्वारा विश्व को बनाने में सात दिन लगे थे। इस सात दिन के संधान के बाद नया वर्ष मनाया जाता है। यह दिन ग्रेगरी के कैलेंडर के मुताबिक ५ सितम्बर से ५ अक्टूबर के बीच आता है।

हिन्दुओं का नव वर्ष चैत्र नव रात्रि के प्रथम दिन अर्थात् वर्ष प्रतिपदा एवं गुड़ी पड़वा पर प्रत्येक वर्ष विक्रम संवत के अनुसार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से आरम्भ होता है। हिंदू कैलेंडर के १२ माह- चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष पौष, माघ और फाल्गुन हैं।

नए साल का आगमन हमेशा नई उम्मीदों, नई ऊर्जा और एक नई शुरुआत का प्रतीक होता है। कैलेंडर बदलने भर से जीवन नहीं बदलता, जीवन तब बदलता है जब हम अपने भीतर सकारात्मक सोच को जन्म देते हैं। यही सकारात्मक विचार हमें परिवार, समाज और राष्ट्र के लिए अर्थपूर्ण योगदान देने की प्रेरणा देते हैं।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम आने वाले दिनों में सकारात्मक कार्यों को अपनाने का निश्चय करें। एक जागरूक नागरिक के रूप में जब हम राष्ट्र भावना के साथ अपना दैनिक जीवन आगे बढ़ाते हैं, तभी हम देश के बेहतर निर्माण में अपनी सशक्त भूमिका निभा पाते हैं। सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक और पारिवारिक स्तर पर फैली हिंसा व नकारात्मकता से मुक्ति तभी होगी जब हम छोटे-छोटे मतभेदों पर क्रोध न बढ़ाकर, संवाद और समझ को प्राथमिकता देंगे।

नया साल तब सार्थक बनता है जब हम केवल कैलेंडर नहीं बदलते, बल्कि अपने विचारों, व्यवहार और दृष्टिकोण को भी सकारात्मकता की दिशा में परिवर्तित करते हैं। समाज में फैली कुरीतियों को हटाने की जिम्मेदारी सिर्फ सरकार या किसी संगठन की नहीं होती, बल्कि हम सभी नागरिकों की होती है। जब सामान्य व्यक्ति भी रचनात्मक सोच अपनाता है और समाज तथा राष्ट्र की प्रगति के बारे में चिंतन करता है, तो सकारात्मक परिवर्तन अवश्य होते हैं।

दुर्भाग्य से कई बार निर्णय लेने वाले लोग निजी स्वार्थ में प्रकृति का अत्यधिक दोहन कर रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप प्राकृतिक आपदाएँ बढ़ती जा रही हैं लेकिन यदि हर स्तर पर जिम्मेदारी का निर्वहन ईमानदारी और तत्परता से किया जाए, तो न केवल देश का गौरव बढ़ेगा बल्कि समाज में स्थायी शांति भी स्थापित होगी।

त्योहार हों या नए साल का अवसर नव संकल्प हम हमेशा लेते हैं, लेकिन उन्हें निभाने में अक्सर किन्तु-परंतु आड़े आ जाते हैं। आजादी के दशकों बाद भी शिक्षा, स्वास्थ्य, न्याय, परिवहन और पर्यावरण जैसे क्षेत्रों में अव्यवस्थाएँ बनी हुई हैं। इसका समाधान केवल आलोचना नहीं, बल्कि सकारात्मक सोच तथा सामूहिक भागीदारी और सामूहिक प्रयास से ही संभव है।

फिर भी आशा की किरण यह है कि समाज में अनेक लोग समान सोच और समान लक्ष्य के साथ सकारात्मक दिशा में कार्य कर रहे हैं। यदि हम सभी मिलकर प्रकृति की रक्षा करें, संसाधनों का सही उपयोग करें, और आने वाली पीढ़ी को स्वच्छ हवा, शुद्ध जल, स्वस्थ पर्यावरण, उत्तम शिक्षा और समान सुविधाओं वाली व्यवस्था सौंपें—तो यह हमारा सबसे बड़ा उपहार होगा तथा इसके सकारात्मक परिणाम भी सामने आएंगे। आवश्यक है कि इस नए साल में हम एक ऐसे संकल्प को अपनाएँ, जो समाज में बढ़ती दूरियों को मिटाए, सकारात्मकता को बढ़ाए और राष्ट्र निर्माण के पथ को सशक्त बनाए। सकारात्मक सोच और सकारात्मक कर्म ही उज्ज्वल भविष्य का मार्ग है—और यह शुरुआत हम सभी को अपने भीतर से करनी है।

-भोपाल

बदलाव रातों-रात नहीं आता

विवेक रंजन श्रीवास्तव

हर बारह महीने बाद हमारे सामने एक ताज़ा कैलेंडर बिलकुल कोरा कैनवास तथा इंद्रधनुष के रंग लेकर आता है। एक जनवरी यह कोई साधारण दिवसांक परिवर्तन नहीं, बल्कि एक मनोवैज्ञानिक प्रस्थान बिंदु है, जो हमें रुककर सोचने, ठहरकर पीछे मुड़कर देखने और फिर से नए संकल्प के साथ शुरू करने का साहस देता है। यह वह अवसर है जब हम पिछले अनुभवों को एक संदर्भ के रूप में संजोते हुए भी, उनके बोझ से अपने मन को मुक्त कर सकते हैं। हर नए साल की पहली सुबह हवा में एक अलग सी ताज़गी, आशा की एक नई लय और संभावनाओं का एक अनूठा संगीत लेकर आती है। इसी लिए इस दिन को दुनियां भर में उत्सव की तरह उत्साह से मनाया जाता है। लेकिन क्या यह सब परिवर्तन अपने आप हो जाता है? नहीं, यह तभी सार्थक बनता है जब हम खुद अपनी सोच की दिशा और दशा बदलने का निश्चय करते हैं।

हमारी सोच अक्सर आदतों के पिंजरे में कैद होती है। हम वही रास्ते चुनते हैं, वही प्रतिक्रियाएं देते हैं और वही डर साथ लेकर चलते हैं। यह पुरानी सोच एक ऐसा आरामदायक कोना बना देती है जहां से बाहर झांकना भी मुश्किल लगता है। नकारात्मकता, हार मान लेने की मानसिकता और असफलताओं का बोझ , ढर्रे पर जिंदगी, ये सब हमारी रफ्तार के रोकते हैं। पर नया साल हमें याद दिलाता है कि समय बदल रहा है, और बदलना ही प्रगति के लिए जीवन का सार है। तो क्यों न हम भी अपनी सोच को नई दिशा दें? नई सोच का अर्थ यह नहीं कि पुरानी हर बात को नकार दिया जाए। बल्कि यह एक विवेकपूर्ण संतुलन है। इसमें अतीत के सबक को साथ लेकर, वर्तमान में जीते हुए, भविष्य के लिए एक लचीली, सकारात्मक और समाधान-उन्मुख मानसिकता का विकास करना होता है।

यह सबसे पहले हमारे नजरिए में बदलाव लाती है। एक ही स्थिति को हम समस्या के रूप में देखें या चुनौती के रूप में, यह हमारी सोच तय करती है। नई सोच क्यों नहीं हो सकता के स्थान पर कैसे हो सकता है पर केंद्रित होनी चाहिए , जो आशा की किरण को जिंदा रखती है। साथ ही, यह हमें जिज्ञासु बनाए रखती है, नई चीजें सीखने के लिए हमें प्रेरित करती है और हमें यह एहसास दिलाती है कि गलतियां असफलताएं नहीं, बल्कि सीखने के सोपान हैं। जीवन अनिश्चितताओं से भरा है, और पुरानी, कठोर सोच मुसीबत में टूट जाती है, जबकि नई और लचीली सोच झुकती जरूर है, लेकिन टूटती नहीं। यह अनुकूलन की क्षमता विकसित करती है। इसमें अतीत की कमियां गिनाने के बजाय, जो मिला है उसके प्रति कृतज्ञ होना और दूसरों के प्रति उदार दृष्टिकोण रखना भी शामिल है।

लेकिन यह बदलाव रातों-रात नहीं आता। नए साल की शुरुआत इसे आरंभ करने का एक शुभ अवसर जरूर है। बड़े-बड़े संकल्पों के बोझ तले दबने की बजाय, एक छोटी, सकारात्मक आदत से शुरुआत करें। जैसे, रोजाना पांच मिनट शांत बैठकर अपने खुद के साथ रहना, एक अच्छी किताब के कुछ पन्ने पढ़ना, या दिन की शुरुआत तीन अच्छी बातें गिनकर करना। जब भी मन कहे यह मेरे बस की बात नहीं, तो एक बार खुद से पूछें, क्या इसे करने का कोई एक छोटा तरीका हो सकता है? सोशल मीडिया की नकारात्मकता और तुलना की दुनिया से अवकाश लेकर, उस समय को अपने शौक, परिवार या स्वयं के साथ बिताएं। अपने से अलग विचार रखने वालों की बात बिना कटुता के सुनने का प्रयास करें, इससे हमारा दृष्टिकोण व्यापक होता है। और सबसे महत्वपूर्ण, अपनी कमियों के प्रति आलोचनात्मक होने के बजाय, स्वयं से वैसी ही प्रोत्साहन की भाषा बोलें जैसी किसी प्रिय मित्र से बोलते हैं।

जब एक व्यक्ति की सोच बदलती है, तो उसका पूरा जीवन बदलने लगता है। रिश्तों में एक नई मिठास आती है, कार्यक्षेत्र में रचनात्मकता बढ़ती है, और मानसिक स्वास्थ्य भी बेहतर होता है। और जब ऐसे अनेक व्यक्ति मिलकर एक समाज बनाते हैं, तो वह समाज प्रगति, शांति और सहयोग का केंद्र बन जाता है। नई सोच समस्याओं को सामूहिक चुनौती के रूप में देखना सिखाती है, जिसका समाधान मिलकर खोजा जा सकता है।

तो आइए, इस नए साल पर हम केवल नए कपड़े, नए साजो-सामान, चमक धमक ही नहीं, बल्कि एक नया दृष्टिकोण भी स्थाई रूप से धारण करें। उस सोच को अपनाएं जो बदलाव से नहीं डरती, जो सीखने के लिए हमेशा तैयार रहती है और जो हर स्थिति में एक संभावना की तलाश करती है। क्योंकि सच तो यह है कि नया साल कोई जादू की छड़ी नहीं है, बल्कि एक नई शुरुआत के लिए हमारे अपने मन का बनाया हुआ एक सुंदर बहाना है। यह बहाना, अगर हम चाहें, तो हमारे जीवन की सबसे सुंदर कहानी का पहला वाक्य बन सकता है। आपकी सोच नई हो, आपका नजरिया उवल हो, और यह नया साल आपके जीवन में अनगिनत नई खुशियां, नई सफलताएं और नई संभावनाएं लेकर आए। शुभ नववर्ष।

-न्यूयार्क

काल्पनिक गणना के दो बिन्दु क्षण और अनन्त!

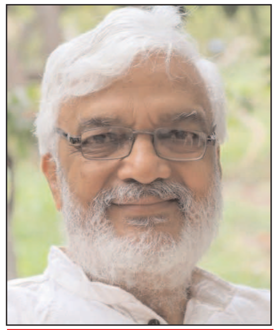

अनिल त्रिवेदी

मनुष्य की अवधारणाएं गजब की है। अवधारणाओं का जन्म कल्पना करने की मानवीय क्षमता से हुआ है। मानवीय क्षमता के दो आयाम है पहला शारीरिक और दूसरा मानसिक या वैचारिक। शारीरिक क्षमता की एक सीमा है जो मनुष्य मनुष्य में बदलती रहती है।पर मानसिक या वैचारिक क्षमता की कोई अंतिम सीमा रेखा नहीं है। मनुष्य की वैचारिकी की कथा हर तरह से अनन्त रूप स्वरूप में प्रत्येक मनुष्य मन में समायी हुई है। शारीरिक क्षमता और वैचारिक क्षमता एक तरह से साकार निराकार की तरह ही है।

हमारे शरीर से हम अकेले शारीरिक क्षमता के आधार पर कोई कार्य सम्पन्न नहीं कर सकते। मानसिक तरंगों की उत्पत्ति से ही शारीरिक गतिविधियां जन्म लेती है। हमारे मन में हर बिंदु हमेशा दो रुप स्वरूप में ही जन्म लेता है। इसलिए ही जीवन हमेशा गतिशीलता का पर्याय बना रहता है। जीवन की अभिव्यक्ति जीव से हुई है या इसे हम इस तरह भी कह सकते हैं जीव, जीवन की साकार अभिव्यक्ति है। जीवन और जीव क्षणिक भी है और अनन्त श्रृंखला के वाहक भी है। अनन्त में समायी ऊर्जा से जीवन की उत्पत्ति हुई या ऊर्जा का साकार स्वरूप जीव है और जीव की गतिशीलता में जीवन समाया हुआ है। सजीव और निर्जीव यो तो ऊपर ऊपर से चेतना और जड़ता के बाह्य या सूक्ष्म स्वरूप है, फिर भी जड़ का सूक्ष्मतम भाग भी ऊर्जा का सूक्ष्मतम स्वरूप हैं यों तो एकसमूचा जगत चेतना या ऊर्जा का अनन्त प्रवाह है।

जो स्थिति बूंद और समुद्र की है वहीं स्थिति क्षण और अनन्त की है। बूंद में समुद्र का अंश समाया है और समुद्र में बूंदे विलीन है।न बूंद में समुद्र दिखाई देता है और न ही समुद्र में बूंदे अपना अस्तित्व या साकार स्वरूप दिखा पाती है। यही हाल समुद्र और लहरों का भी है ।समुद्र से लहरें है या लहरों से समुद्र का स्वरूप अभिव्यक्त होता है! बूंद और समुद्र या लहरें और समुद्र एक दूसरे में इस तरह घुले मिले हैं कि प्रत्यक्ष तौर पर दोनों का मिला-जुला रूप ही अभिव्यक्त होता है पृथक-पृथक नहीं। यही स्थिति क्षण और अनन्त की भी है, सिद्धांतः दोनों अलग अलग दिखाई पड़ते या अनुभूत होते हैं पर मूल रूप से अलग न हो एक कल्पना के दो छोर ही है। कल्पना हमेशा निराकार ही होती है पर मनुष्य अपनी कल्पनाओं को साकार स्वरूप देना जीवन का लक्ष्य समझता है।जीव और जीवन भी इसी तरह एक दूसरे में समाये हुए हैं।जीव बूंद हैं तो जीवन लोकसागर जिसमें वनस्पति जगत भी शामिल हैं।

इस जगत में एक जैसे दो जीव नहीं है और न हीं दो वनस्पति एक समान, जीव और वनस्पतियां अंतहीन विभिन्नताओं का अखंड सिलसिला है। एक ही वृक्ष की एक जैसी दो शाखाएं या पत्तियां भी नहीं होती है फिर भी इतनी विभिन्नताओं में जीवन की एक रूपता है जन्म और मृत्यु की अनन्त श्रृखंला। जन्म जीव का साकार स्वरूप है तो मृत्यु साकार स्वरूप का निराकार में समाहित हो पुनः अनन्त में विलीन हो जाना है।

जगत में मौजूद जीवन और जीव में अनन्त विभिन्नताओं के अस्तित्व में होने पर भी जीवन और जीव में एक निरन्तर एकरूपता दिखाई देती है। जीवन ऊर्जा की एक अनोखी श्रृंखला की तरह है ।जिस में कहीं न कहीं,कोई न कोई जीव तो हर क्षण जन्मता और मृत्यु को प्राप्त हो निराकार में विलीन हो जाता है पर जीव और जीवन की अंतहीन साकार श्रृंखला अनवरत जारी रहती है।

जीव के अंदर भी अनगिनत कोशिकाओं के जन्म और मृत्यु का अनवरत सिलसिला जारी रहता है। जीव का अंदरूनी जगत और बाह्य जगत जीव के साकार स्वरूप में होते हुए भी निराकार है। निराकार जगत की गतिशीलता का कोई ओर-छोर नहीं होता। फिर भी जगत में निरन्तर चलने वाली गतिविधियां अदृश्य होने के बाद भी समूचे जगत के अनन्त जीवों के जीवन चक्र को क़ायम रखने का काम बिना रुके या थके करती ही रहती है।

जीवन सरल है पर आज इस दुनिया के सारे मनुष्य अपनी कल्पनाओं के साकार स्वरूप में दिन-प्रतिदिन तरह तरह के संशोधन, संवर्धन करने में लगे हुए है। इस कारण इस दुनिया में आजतक जहां वनस्पति जगत सघनता से प्रचुरता के साथ क़ायम है वहां वहां जीव और जीवन का प्राकृतिक स्वरूप मौजूद है। पर जहां जहां दुनियाभर में मनुष्य की बहुलता है वहां वहां मनुष्यकृत जटिल जीवन साकार स्वरूप में अभिव्यक्त होने लगा है।

मनुष्य की अधिकांश कल्पनाएं क्षणभंगुर होने के साथ जटिल ही होती है और इसी से जीवन का प्राकृतिक क्रम टूटता आभासित होता है। पर मनुष्य की बसाहट की सघनता क्षीण होने पर जीवन का प्राकृतिक स्वरूप पुनः साकार स्वरूप में परिवर्तित होने लगता है। मनुष्य और शेष जीव जिसमें वनस्पति जगत भी शामिल हैं में मूलभूत अंतर यह दिखाई देता है कि मनुष्येतर जीव जंतु और वनस्पतियों का जीवन प्रारंभ से प्राकृतिक अवस्था में ही चलता रहा है और रहेगा। पर मनुष्य की कल्पना शक्ति सहजता से सहजीवन से अलग मनुष्यकृत आभासी दुनिया में जीवन जीने की भंयकर भूख को शांत करने के लिए जटिलतम आभासी जीवन के मकड़जाल में उलझता ही जा रहा है। -इन्दौर

आत्म मंथन का नया अवसर

श्याम सखी सीमा

हर नया साल हमारे जीवन में एक नया उत्साह, नई उम्मीद और नई शुरुआत का संदेश लेकर आता है। कैलेंडर का एक पन्ना बदलने के साथ-साथ यह समय हमें अपने विचारों, आदतों और दृष्टिकोण को भी बदलने का अवसर देता है। 'नया साल, नई सोच' केवल एक वाक्य नहीं, बल्कि आत्ममंथन और आत्मविकास की प्रेरणा है।

वर्ष २०२५ अनेक अनुभवों और चुनौतियों से भरा रहा। कुछ सपने पूरे हुए होंगे तो कुछ अधूरे रह गए होंगे। नई सोच का अर्थ है—असफलताओं को निराशा का कारण न बनाकर उन्हें अनुभव की पूंजी मानना। जब हम अपनी कमियों को स्वीकार करते हैं और उन्हें सुधारने का प्रयास करते हैं, तभी वास्तविक प्रगति संभव होती है। २०२६ हमें यह अवसर देता है कि हम अतीत के बोझ को छोड़कर आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ें।

बीता हुआ वर्ष हमें अनुभव, सीख और स्मृतियाँ देकर जाता है। कुछ उपलब्धियाँ गर्व से भर देती हैं, तो कुछ असफलताएँ हमें ठहरकर सोचने पर मजबूर करती हैं। नई सोच का अर्थ है—बीती गलतियों से सीख लेना, असफलताओं को बोझ नहीं बल्कि सीढ़ी बनाना और आगे बढ़ने का साहस रखना। जो व्यक्ति अतीत में ही उलझा रहता है, वह भविष्य की संभावनाओं को देख नहीं पाता।

नई सोच का सबसे पहला कदम है सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना। समस्याएँ हर जीवन में आती हैं, परंतु उन्हें देखने का नजरिया तय करता है कि हम टूटेंगे या मजबूत बनेंगे। सकारात्मक सोच हमें आत्मविश्वास देती है और कठिन परिस्थितियों में भी रास्ता खोजने की शक्ति प्रदान करती है। नया साल हमें यह सिखाता है कि शिकायतों की जगह समाधान खोजें और निराशा की जगह आशा को अपनाएँ।

नया साल नई सोच के साथ नई आदतें अपनाने का भी अवसर देता है। स्वस्थ जीवनशैली, अनुशासित दिनचर्या, समय का सही उपयोग और निरंतर सीखने की आदत जीवन को बेहतर बनाती है। यदि हम हर दिन स्वयं को थोड़ा-सा बेहतर बनाने का प्रयास करें, तो वर्ष के अंत तक बड़ा परिवर्तन संभव है। छोटी-छोटी अच्छी आदतें मिलकर बड़ा सकारात्मक बदलाव लाती हैं।

आज के तेज़ी से बदलते समय में नई सोच का अर्थ है—परिवर्तन को स्वीकार करना। तकनीक, समाज और कार्यक्षेत्र निरंतर बदल रहे हैं। जो व्यक्ति सीखने के लिए तैयार रहता है, वही आगे बढ़ता है। नई सोच हमें खुला मन रखने, नए विचारों को अपनाने और विविधताओं का सम्मान करने की प्रेरणा देती है।

नया साल सामाजिक और मानवीय सोच को भी विस्तार देने का संदेश देता है। केवल अपने लाभ के बारे में सोचना पर्याप्त नहीं है; समाज और पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी भी हमारी नई सोच का हिस्सा होनी चाहिए। दूसरों की मदद करना, सहयोग की भावना रखना और प्रकृति का संरक्षण करना एक बेहतर भविष्य की नींव है।

अंततः, नया साल हमें यह याद दिलाता है कि परिवर्तन बाहर से पहले भीतर से शुरू होता है। जब सोच बदलती है, तभी जीवन की दिशा बदलती है। नई सोच के साथ लिया गया हर छोटा कदम हमें अपने सपनों के करीब ले जाता है। आइए, इस नए साल में पुरानी सीमाओं को तोड़कर, सकारात्मकता और आत्मविश्वास के साथ एक नई सोच अपनाएँ और अपने जीवन को अर्थपूर्ण बनाएं।

-फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश

प्रेम की नई सोच

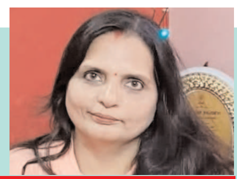

डॉ. सुनीता त्रिपाठी

नया साल
किसी तारीख़ का बदलना नहीं,
प्रेम का
नए ढंग से जन्म लेना है।

इस बार सोच की शुरुआत
शिकायतों से नहीं,
समझ से हो।

शब्दों में कठोरता नहीं,
स्पर्श हो।

हम एक-दूसरे को
सही साबित करने से पहले
अपनाने की कोशिश करें।

नया साल में...
प्रेम माँगना नहीं,
बांटना सीखें हम

कम अपेक्षाएँ,
ज़्यादा स्वीकार,
कम अहंकार,
ज़्यादा करुणा।

इस साल
हम रिश्तों को वक्त
देंगे, और वक्त को
रिश्तों जैसा निभाएँगे।

जो छूट गया,
उसे क्षमा में बदलेंगे,
जो बचा है, उसे सहेजेंगे।

नया साल
एक प्रार्थना है—
कि हमारी सोच में
प्रेम हो,
और हमारे प्रेम में
मनुष्य।

-लखनऊ

नए विचारों से नए साल का स्वागत

डॉ. सीमा अग्रवाल

नया साल के आगमन के पूर्व ३१ दिसंबर को हर साल बहुत जगह विभिन्न कार्यक्रम रखे जाते हैं। नया साल आने वाला है अर्थात इंग्लिश के कैलेंडर से देखें तो १ जनवरी २०२६, नए साल का स्वागत तो हम बहुत जोर-शोर से करते हैं। खेल गाने बजाने नाटक और फिर ३१ दिसंबर की रात्रि के ठीक १२ बजे तेज रोशनी से नए साल का स्वागत करते हैं और सबको मिलकर बधाई दी जाती है, डांस आदि कर उत्सव मनाया जाता है और मिठाइयां खाते हैं, खिलाते भी हैं।

मगर हमें यह नहीं भूलना चाहिए, नया साल में हमारी जिंदगी का एक साल कम कर दिया है। नए साल का स्वागत हमें अपनी बुरी आदतों को छोड़ सकारात्मक विचारों को अपना कर जीवन में नई उम्मीद, नया लक्ष्य अपनाना होगा तभी नए साल का आगमन हमारे जीवन में सार्थक होगा।

बीता साल हमें बहुत कुछ सिखा कर जाता है। हमें नया साल नया सोच को अपनाना होगा। हम इसे बेहतर सोच से शुरुआत करें जैसे अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहे, नौजवान को अपने कैरियर व व्यक्तिगत विकास के लिए सबको बेहतर बनाने की सोच रखनी चाहिए। बीते वर्ष, बीती खुशियों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करनी चाहिए और वर्तमान में जीना चाहिए। बीते समय से कुछ सीख लेकर, नया सोच धारण करना चाहिए।

नया साल हमें खुद को बदलने, नया लक्ष्य तय करने और पिछली गलतियों पर सीखने का मौका देता है। नकारात्मक विचारों से हटकर खूबियों पर ध्यान देना, हर दिन को एक नई उम्मीद के साथ देखना चाहिए। अच्छे कार्यों की शुरुआत जैसे (कसरत, प्राणायाम, ध्यान) आदि से व्यक्ति खुश हुआ स्वस्थ रहता है, अतएव हमें बुरी आदतें जैसे धूम्रपान आदि को छोड़ना चाहिए।

नया सोच के लिए हमें उन चीजों पर ध्यान देना चाहिए, जिनके लिए आप आभारी हैं। वह सकारात्मक को बढ़ाता है। वर्तमान में जीना, अतीत की चिंता और भविष्य के प्रति फिक्र छोड़कर वर्तमान में जीना चाहिए। नए साल में हमें क्या करना है और हमारी जीवन शैली में क्या परिवर्तन करना है, उस पर ध्यान केंद्रित करें। उदाहरण के लिए-

१-हमारे देश में यातायात एक समस्या होती जा रही है। इसके लिए घर से काम करना, या साइकिल से काम चलाने का बढ़ावा देना। इससे प्रदूषण भी कम होगा।

२-कवि और लेखकों का नया सोचकर कहानी, उपन्यास या छोटी-बड़ी कविता के माध्यम से नया विचार प्रस्तुत करना चाहिए।

३-हमारे देश को यदि विकसित देश की श्रेणी में लाना है तो अशिक्षा, गरीबी को दूर करने के साधन और अनाथों को घर बनाने का उपाय बनाने का संकल्प लेना चाहिए।

४-पुरानी धारणाओं में नवयुवकों को केवल इंजीनियर या डॉक्टर ही नहीं, खेलों के साथ में पढ़ाई की ओर प्रेरित करना चाहिए।

५-लघु उद्योगों को बढ़ावा, नौजवान को इसमें मेहनत व रिस्क लेने के लिए तैयार करना होगा।

६-खेती व किसानी पर जोर देना होगा। उनको बिना किसी केमिकल युक्त सब्जी या फल बनाने वाले को पुरस्कृत करना।

७-सौर ऊर्जा को बढ़ावा देना।

८-अब शिक्षा में १२वीं क्लास के बाद विभिन्न नए-नए छोटे कार्यों की शिक्षा देने पर जोर देना जैसे गृह सज्जा (होम डेकोरेटर), देह सज्जा (ब्यूटी पार्लर), बिजली के काम करने जैसे कार्य सीखना इत्यादि।

९-स्वच्छ भारत अभियान के लिए प्रेरित करना और पुराना प्लास्टिक पन्नियों का नया प्रयोग या नया रूप देना।

१०-पर्यावरण के लिए पेड़ पौधे लगाने की ओर आने वाली पीढ़ी को प्रोत्साहित करना चाहिए।

उक्त कार्यों द्वारा हम अपने देश पर गर्व कर सकेंगे, व स्वावलंबी बन परिवार का भरण- पोषण कर सकेंगे और समाज को नई दिशा भी दे सकेंगे। -भोपाल

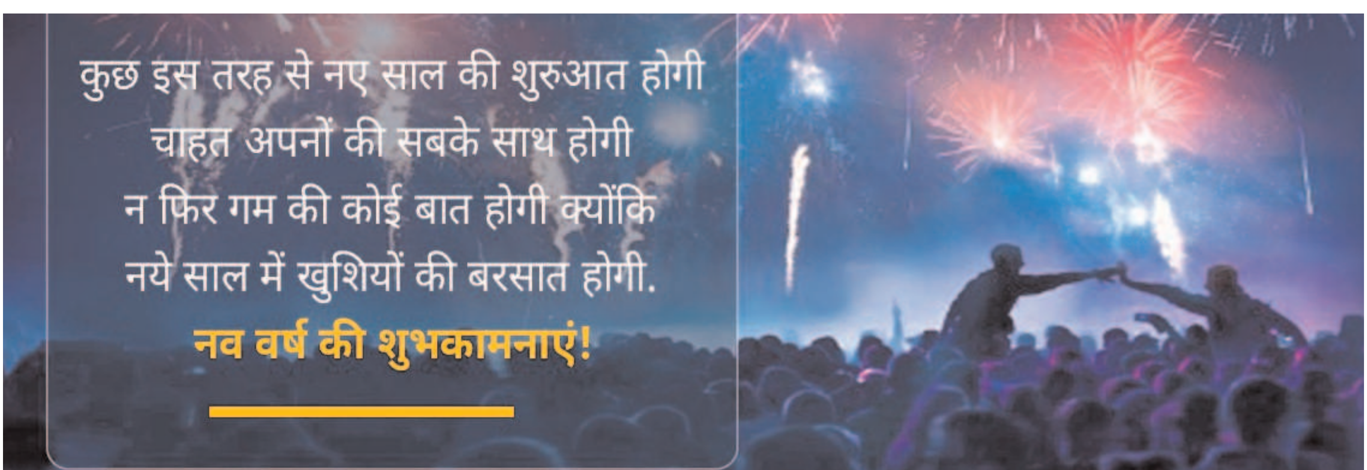

आशा लता दुबे

जीवन में कोई कार्य असंभव नहीं

दिसंबर के महिने का आखरी सप्ताह चल रहा था, सर्दी भी अपने चरम पर थी, मैं अपने आंगन में बैठी धूप सेक रही थी और अपनी स्वर्गवासी मां को याद कर रही थी, एक दिन वह, मेरी बड़ी बहन को समझा रही थी, कह रही थी बेटा जाड़े की धूप जैसा तपना कभी भी जेठ की धूप जैसा मत तपना ।

मैंने दूसरे दिन उनसे पूछा- मां ये जाड़े की धूप और जेठ की धूप का क्या मतलब है तब उन्होंने समझाया- जेठ की धूप शरीर को जलाती है वैसे ही घर की लक्ष्मी बेटी या बहू क्रोधित हो तो गुस्से में अपना आपा खो देती है और उसकी क्रोध की अग्नि से घर खंड खंड हो जाता है, परिवार बिखर जाता है। सर्दी की धूप मन को भाती है, अच्छी लगती है, शरीर को ताप देती है विटामिन देती है जिसकी हर किसी को जरूरत होती है।

मुझे उस समय तो मां की बात ज्यादा गहरी नहीं लगी लेकिन आज एक पत्नी, मां बनने पर उसकी अहमियत समझ में आई ।आज बैठे बैठे एक सोच मन में उठ रही थी कि जीवन में मैंने ऐसा क्या किया जो मुझे अलग हटकर करना था, जो सबके लिए एक मिसाल होती। मुझे कोई जवाब नहीं सूझा, तभी एक किसान की याद आई जिसने अकेले दम से पहाड़ को काटकर शहर और गांव की दूरी कम कर दी थी। उसने गांव के सभी लोगों को आवागमन की परेशानी से बचाया था, बीमारों को समय पर इलाज उपलब्ध हो सके इसका इंतजाम किया था और विद्यार्थियों को शिक्षा के लिए पहाड़ी पर चढ़ने उतरने जैसी कठिनाई से निजात दिलाई थी। उसने व्यापारी और किसानों को अपने सामान की क्रय विक्रय की सुविधा मुहैया कराई थी ,यह सब मात्र एक व्यक्ति के कारण उसकी मेहनत और लगन के कारण संभव हुआ था,उस व्यक्ति का नाम दशरथ माझी था, वह बिहार से था, उसने लगातार २२ वर्ष तक अकेले हथौड़ी और छैनी से पहाड़ काट डाला था। उसने सफलता पाई क्योंकि उसने कभी नहीं सोचा कि जो कार्य वह कर रहा है असंभव है ।

इसी तरह आसाम के जादव मोलाई पाइन ने भी अकेले ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे १३६० एकड़ का जंगल उगाया,उसने अपने काम से नदी के कटाव को रोका, बाढ़ से कई गांवों को बचाया, पशु पक्षियों को बसेरा उपलब्ध करवाया, प्रकृति की सच्ची सेवा की, तो फिर मैं क्यों कुछ नया नहीं कर सकती, मैं क्यों नहीं जाड़े की धूप जैसे तप सकती ?

मैंने अपने आसपास के गरीब बच्चों को शिक्षा देने और शिक्षा से संबंधित साधन जुटाने का निश्चय किया जैसे ही मैंने इस पर विचार किया मेरा मन नए जोश से भर गया, नई ऊर्जा से भर गया, हर्ष और उल्लास से भरी मैं, कमरे में बच्चों जैसी इधर से उधर चहल कदमी करने लगी और अपनी नई सोच के साथ २०२६ के स्वागत की तैयारी में जुट गई।

लेखिका का संक्षिप्त परिचय

जन्म-१६ दिसंबर १९५५ (देवरी,सागर)
शिक्षा-एम अर्थशास्त्र,एमए हिन्दी, बीएड (बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल)
संप्रति- शिक्षा विभाग
रुचियां - लेखन ,पठन-पाठन एवं भ्रमण।
विशेष यात्राएं -पेरिस, फ्रांस के अधिकांश शहर, इटली, वेटिकन सिटी ,स्विट्जरलैंड, स्पेन , नेपाल, कैलाश मानसरोवर आदि।
परिवार- पति श्री केशव चरण दुबे,
पुत्र- अतुल चरण दुबे
पुत्रियां- दीपाली त्रिवेदी, शैफाली राजपाल
पता- **Dx**-७४
शिवा रायल पार्क,फेस-वन
सलैया, भोपाल-४७

नव वर्ष

माण्डवी सिंह

नव छंद रचो नव गीत रचो
कोमल सुन्दर संगीत रचो
कुछ तुम गाओ कुछ मैं गाऊँ
आओ, मिलकर हम खो जाएँ।
इस नए वर्ष की प्रखर भोर में
पावन पुलकित हो जाएँ।

सद्कर्म करें ऐसा जिससे
आँचल वसुधा का लहराए
संगीत भरें ऐसा जिससे
सारा जग मधुमय हो जाए
उड़े नव पराग हो नव वसंत
सोंधी मिट्टी की नव सुगन्ध
यश कीर्ति रचो ऐसा जिससे
नव में सब नवमय हो जाएँ
इस नए वर्ष .....

ईमान सत्य का साथ रहे
आशीष का सिर पर हाथ रहे
सूरज सा दीप्त ललाट रहे
जय-विजय का नव सौगात रहे
नव गीत रचो, नवमीत रचो
कुछ सुखद सार नवनीत रचो
हमसब मिल झंकृत हो जाएँ।
इस नए वर्ष की प्रखर भोर में
पावन पुलकित हो जाएँ। - भोपाल

केशव चरण दुबे

कहानी

कुछ अलग

आज ३१ दिसंबर है, मेरी सरकारी नौकरी का आखिरी दिन। शाम को मैं सेवानिवृत्त होने वाला हूं। मेरी सेवा निवृत्ति पर हुई विदाई पार्टी के बाद, मुझे मेरे साथी घर तक छोड़कर चले गए।

मैं अभी फुर्सत से बैठा भी नहीं था कि अविनाश मेरे पड़ोसी का लड़का मेरे घर आया।

नमस्ते अंकल जी, उसने आते ही कहा। उसके चेहरे पर वही चिर-परिचित मुस्कान खिली हुई थी, उसका चेहरा जोश और उत्साह से चमक रहा था।

परंतु उसे देखते ही मेरे माथे पर त्योरियां पड़ गई।

लो आ गई मुसीबत, मैंने मन ही मन में सोचा ।

अंकल जी, अब तो आप फ्री हैं उसने कहा, अब तो आप मुझे टाइम दे सकते हैं ।

मुझे उत्तर ना सूझा क्योंकि अभी तक टाइम नहीं है, कहकर मैं उससे छुटकारा पा लिया करता था।

वह दर्जनों एनजीओ से जुड़ा हुआ था। कुछ एनजीओ वह खुद चलाता था। राह चलते बूढ़े गरीब असहाय लोगों को, जिनका या तो कोई सहारा नहीं था या जिनके दुष्ट बहु- बेटों ने उनका जीना हराम कर रखा था,उनको वह जाने कहां-कहां से ढूंढ कर लाता था। उनका इलाज करवाता था,वृद्धाश्रम में भर्ती करवाता था और वृद्धाश्रम चलाने हेतु चंदा इकट्ठा करने का भी काम करता था।

मुझसे भी उसने कई बार चंदा मांगा था परंतु मैंने अपनी आर्थिक कठिनाई का हवाला देकर अक्सर उसे निराश ही किया था। अकेले वृद्धों की कोई बात होती, तो भी कोई बात नहीं थी। वह सड़कों में लावारिस घूमती बीमार गायों को पकड़ लाता था और उनकी सेवा सुश्रुषा करता था, उन्हें गौशाला में रखवाता था और गौशाला के लिए भी दान इकट्ठा करता था।

जब मुझे पता चला कि वह सड़क दुर्घटना में घायल जानवरों, कुत्तों आदि को लेकर जानवरों के अस्पताल में जाकर उनका भी इलाज करवाता है तो मेरे मुंह से यही निकला कि यह तो हद हो गई है, शायद निठल्ला है । कोई कामकाज नहीं है इसीलिए वह इन फालतू कामों में लगा रहता है।

उसने आगे कहा-अंकल जी, अब तो आप टाइम की कमी का बहाना नहीं बना सकते। अब तो आपके पास टाइम ही टाइम है, उसने पुन: अपनी बात दोहराई क्या है। मैंने अनमने मन से पूछा।

अंकल जी, मैंने पास की झुग्गी झोपड़ी बस्ती में पिछले पूरे एक माह सर्वे किया था। करीब डेढ़ सौ झुग्गियां हैं, उनमें लगभग पैंतालीस ऐसे गरीब बच्चे हैं, जो सरकारी स्कूल में तो जाते हैं परंतु उन्हें चौथी क्लास में भी, दो का पहाड़ा तक नहीं आता है। पढ़ना लिखना तो दूर की बात है। ऐसे बच्चों का कोई भविष्य नहीं है। वे केवल स्कूल में सरकार द्वारा दिए गए, मध्यान्ह भोजन को खाने के लिए ही स्कूल जाते हैं।

आप कृपया रोज दो घंटे उन्हें समय दीजिए, पढ़ाई लिखाई में उनका इंटरेस्ट उत्पन्न करिए, उन्हें पढ़ाई लिखाई से होने वाले लाभ और उनके उज्जवल भविष्य का रास्ता दिखाइए।

मैंने यहां के पार्षद से मिलकर उनके ट्यूशन की व्यवस्था एक सार्वजनिक वाचनालय में करवा दी है। रात को हर दिन एक घंटे हम उनके मां-बाप को भी पढ़ाकर उन्हें भी साक्षर बना सकते हैं।

अजीब मुसीबत है मैंने मन ही मन सोचा परंतु प्रत्यक्ष में मैंने उससे कहा भाई मैं जिंदगी भर काम करते करते थक गया हूं। अब मैं कुछ दिन आराम करना चाहता हूं। मैं परिवार के साथ समय बिताना चाहता हूं। उनके साथ घूमना चाहता हूं। अपने सपने जो मैंने कभी देखे थे और जिन्हें मैं समय की कमी के कारण, अपने कर्तव्यों के निर्वहन के कारण, पूरा नहीं कर पाया, उन्हें मैं अब पूरा करना चाहता हूं। इसलिए कृपया मुझे माफ करो।

वह हंसने लगा। माफ कीजिए, मुझे नहीं लगता कि आपने कभी कोई सपने देखे होंगे। आपने अपनी सारी जिंदगी दाल रोटी कमाने में, अपने और अपने परिवार की आजीविका को कमाने में नष्ट कर दी है। आपने वही किया जो सभी करते हैं। आपने हमेशा आसान रास्ता चुना है। आप सामान्य रूप से अपनी जिंदगी बिता रहे हैं। अपना वक्त काट रहे हैं। आपने अपने जीवन में कोई सपने नहीं देखे हैं।

तुम ऐसा कह सकते हो , क्योंकि तुम्हारे पास कोई काम-धाम नहीं है। मेरी सलाह मानो कुछ ढंग का काम करो, शादी करो, बच्चे पैदा करो, गृहस्थी चलाओ, यही जीवन जीने का सही तरीका है। सब इसी रास्ते पर चलते हैं। यह लाखों करोड़ों के द्वारा,पीढ़ी दर पीढ़ी आजमाया हुआ है।

वह फिर हंसा, अंकल जी मैंने कंप्यूटर साइंस और एमबीए दोनों में पूरे कॉलेज में टॉप किया था। मेरे सामने दर्जनों कंपनियां, करोड़ों के पैकेज के साथ सीईओ का पद देने के लिए तैयार खड़ी थीं परंतु मैंने सपना देखा था, कुछ करने का, मैंने अपनी इच्छा से उन्हें मना कर दिया और उन्हीं कंपनियों के लिए, घर पर बैठकर सॉफ्टवेयर डेवलप करने का एक कमतर जिम्मेदारी का ऐसा कार्य चुना , जिसमें मैं रात में बैठकर भी अपना कार्य पूर्ण कर सकूं ताकि मैं समाज सेवा के लिए अपना समय बचा सकूं और समाज सेवा में अपना समय दे सकूं। मैं वह वेतन तो नहीं कमा रहा हूं, जो कंपनियां मुझे ऑफर कर रही थीं, परंतु अभी भी मैं हर महीने अपने इस काम से लाखों रुपए कमा रहा हूं। यह मेरी च्वाइस है,यह मेरे सपने हैं जो मैं पूरा कर रहा हूं।

मेरी इच्छा थी कि कुछ ऐसा करूं कि जीवन सार्थक बने, मैंने सपने देखे और उन्हें प्राप्त करने का प्रयत्न भी किया परंतु खैर, जैसी आपकी मर्जी वह उठकर चला गया।

वह जा चुका था परंतु मैं कुर्सी पर जड़वत बैठा रह गया। वह सही कह रहा था वास्तव में मेरी जिंदगी में कोई उद्देश्य नहीं था, कोई

सपना नहीं था, जैसे सब पैदा हुए मैं भी पैदा हुआ था। जैसे सब बच्चे स्कूल जाते थे मैं भी जाता था। सब बच्चों को उनके मां-बाप सुबह सुबह उठाकर तैयार कर स्कूल भेजते थे।

थोड़ा बड़ा होने पर मुझे यह पता चला कि पढ़ना लिखना जरूरी है वरना बड़े होकर ना नौकरी मिलेगी ना शादी होगी। मैंने अपनी क्षमता मैंने अपनी सामान्य क्षमता और योग्यता के हिसाब से अपनी पढ़ाई पूरी की।

माता-पिता की स्थिति ऐसी नहीं थी कि डोनेशन के सहारे मेरा एडमिशन मेडिकल या इंजीनियरिंग में कराते। परंतु मैंने भी कभी (डोनेशन का विकल्प ना होने पर) पढ़ाई लिखाई में ज्यादा मेहनत करने पर विचार नहीं किया, क्योंकि मेरी नजर में जीवन में आनंद भी जरूरी था। खेल भी जरूरी था इसलिए जीवन के सभी आनंदों को उठाते हुए जैसी मेरी योग्यता थी , मैंने पढ़ाई पूरी की।

मेरी जिंदगी मुझे जिस रास्ते पर ले जाती रही मैं सामान्य ढंग से उस पर चलता रहा। दर्जनों नौकरियों के लिए मैंने एप्लाई किया, जो भी नौकरी मिली कर ली। परिवार की सहमति से मैंने शादी की गृहस्थी बनाई माता-पिता और बच्चों के लिए अपने कर्तव्यों को पूरा किया क्योंकि यह सब मुझे करना ही था और यही मेरा कर्तव्य भी था। मैं अपने कर्तव्य मार्ग से कभी भी और कहीं भी नहीं डिगा मगर यह सच था कि मैं अभी तक केवल अपने लिए जीता रहा और इसके लिए मैंने आसान रास्ता चुना कभी बड़ी-बड़ी महत्वाकांक्षाएं नहीं पाली, कभी भी बड़े-बड़े सपने नहीं देखे, कोई विशेष परिश्रम और मेहनत नहीं की, जिंदगी की गाड़ी चल रही थी और इसी तरह चलते चलते खत्म हो जानी थी।

कुछ अलग करके करना क्या है यही मेरा विचार था। करोड़पति हो या गरीब, राजा हो या रंक, साधु हो या एक सामान्य व्यक्ति सभी का एक ही अंत है इसलिए हमें अपने जीवन को बिना कष्ट के सुख पूर्वक व्यतीत करना है। यही मेरा अब तक की सोच थी । अचानक पटाखों के फूटने की आवाज आई रात के बारह बज गए थे और नया साल शुरू हो गया था। देश और शहर में नए साल के स्वागत में जश्न मनना शुरू हो गया था। मेरी तंद्रा भंग हो गई। एक मनुष्य की जिंदगी ऐसे ही सामान्य रूप से जीने के लिए नहीं है। मनुष्य की जिंदगी बहुत खास है, यह अमूल्य है इसे ऐसे ही जाया नहीं कर सकते। मैं अभी जिंदा हूं, मरा नहीं , मेरे पास अभी भी वक्त है। इस जिंदगी को मैं अब यूं ही जाया नहीं करूंगा।

मैंने सोचा, मैंने उठकर अविनाश को फोन लगाया, नए साल का आगमन हो रहा था अविनाश झुग्गी-झोपड़ी की बस्ती में गरीब बच्चों के साथ उत्सव मना रहा था। उन्हें सपने दिखा रहा था ,कैसे दृढ़ निश्चय, अटूट विश्वास और कठोरु कर्म से तकदीर को बदला जा सकता है ,उन्हें बता रहा था यह जीवन सिर्फ जीने के लिए नहीं है, यह एक चुनौती है, यह एक अवसर है, कुछ ऐसा कुछ कर गुजरने के लिए कि ईश्वर के ओठों पर भी अपनी इस कृति को देखकर मुस्कान आ जाए और वह आनंद विभोर हो जाए । मेरे फोन की घंटी बजते ही अविनाश ने कहा नए साल की बहुत-बहुत, बधाई अंकल जी ,कहिए क्या बात है।

कल बच्चों को पढ़ाने कितने बजे आना है मैंने पूछा।

-भोपाल

बदलाव

रानी सिंगला

सभी को बेसब्री
इंतजार है
साल बदलने का।

लेकिन
क्या बदलेगा,
कुछ भी तो नहीं,
सिर्फ दीवार पर टंगे,
उस कैलेंडर के सिवा।

फिर भी सब कहेंगे?
कि साल बदल गया,
चलो मान लिया
साल बदल जाएगा।

मगर कहां बदलेगा
लोगों का,
ज़रा सी बात पर,
साथ छोड़कर
चले जाना।

नहीं बदलेगा किसी का,
किसी से मन भर जाना,
हां कुछ भी
नहीं बदलेगा।

अगले साल भी दिखेगा
वो भिखारी,
जिसे कुछ देकर हम
दानी बन जाते हैं।

ठंड की ठिठुरन तब भी,
फुटपाथ पर सोए हुए
लोगों के लिए
वैसी की वैसी ही रहेगी,
नए साल की
गर्माहट,
उन्हें कहां महसूस होगी।

कहां बदलेंगी
हमारी भावनाएं,
दिलों में नफरत
वैसी ही रहेगी।

क्या आपको लगता है
कुछ बदलेगा,
नहीं है बदलने जैसा
कुछ भी यहां,

देख लेना
दोस्तों,
अपने चारों तरफ
नज़र घुमा कर,
दीवार पर टंगे
उस कैलेंडर के
सिवा,
कहीं कुछ नहीं
बदलेगा,
साल बदलने से
क्या खास होता है?

खुद की सोच
बदलो
तो कोई बात बने...
पानी को भी
तैरना हो,
तो खुद को
बर्फ में
बदलना पड़ता है...

उसी तरह जीवन में
सुखी होना है,
तो हमें विचारों को
भी समय के
अनुसार बदलना
ही पड़ेगा...।

-लुधियाना

फिर वही शुरुआत

सूफिया ज़ैदी

जैसे जैसे नया साल आ रहा है... ये आपके जीवन की कहानी में एक अध्याय खोलने जैसा है।

ये बिल्कुल एक नई शुरुआत जैसा लगता है, खुद को फिर से स्थापित करने,नए सिरे से पुरानी गलतियों को सुधारने,और आगे आने वाली चुनौतियों पर नियंत्रण पाने का मौक़ा।यही से नया साल नई सोच का विचार आता है । ये सिर्फ लक्ष्य निर्धारित करने या संकल्प लिखने के बारे में नहीं है ये आपके सोचने और जीवन के प्रति दृष्टिकोण को बदलने के बारे में है।

साल २०२५ गुज़रने को है। हर बार की तरह इस बार भी ये साल बहुत सी खट्टी मीठी यादों को अपने संग ले कर गुज़र जाएगा और हम फिर नए साल में बहुत से प्रण बहुत से वादे बहुत सी योजनाएं लेकर प्रवेश करेंगे लेकिन हर बार की तरह हम नए साल का जश्न तो खूब जोशो खरोश के साथ मनाएंगे और कुछ ही दिनों बाद अपने प्रण अपने वादे अपनी योजनाएँ भूल जाएंगे।

हमारे सारे सपने फिर अधूरे रह जाएंगे। ये वो सपने हैं जो हम साल के अन्तिम पलों में देखते हैं। हम सोचते हैं कि इस बार नए साल में हमारे देश में जो भी समस्याएँ हैं जिन्हे हम अपनी सरकार के भरोसे छोड़ देते हैं ये सोच कर कि ये तो सरकार का फ़र्ज़ है उन समस्याओं को दूर करने के लिए ठोस कदम उठाएंगे लेकिन नया साल आते ही धूम-धाम से जश्न मनाने के बाद सारा जोश ठंडा पड़ जाता है।और जब साल अपने अन्तिम पड़ाव पर आता है तो हम फिर अपने को उन्ही समस्याओं से घिरा हुआ पाते हैं।

हमारे देश में भले ही देश की बेटी चाँद को छू रही है लेकिन फिर भी सुरक्षित नहीं है निर्भया कांड से सबकी रूह कांप उठी थी। भले ही उस समय सब के मन में ये विचार आया हो कि अब कोई,बेटी इज़्ज़त की खातिर अपनी जान नही गँवाएगी लेकिन फिर एक नर्स जो देश के लोगों के लिए प्रशिक्षित हो रही थी उसके अपने ही देश वासियों ने अपनी काम पिपासा को शांत करके मौत के घाट उतार दिया। क्या उसका क़ुसूर यही था कि वो देशवासियों की सेवा करना चाहती थी?

आज भी हमारे देश में भुखमरी की समस्या चरम सीमा पर है। मेहनत मज़दूरी करने वाला व्यक्ति अपने परिवार का गुज़ारा मुश्किल से कर पाता है। जो किसान खेतों में देश के लिए मौसम की परवाह किये बिना अनाज पैदा करता है उसी को भरपेट खाना नहीं मिलता। देश के कई राज्य भुखमरी के कगार पर हैं। बहुत से लोग महानगरों में रहते हुए मेहनत करके भी भरपेट खाना नहीं खा पाते। आँखों में सैकड़ों सपने लेकर आते हैं और भूखे पेट हमेशा के लिए उन अधूरे सपनों संग सो जाते हैं।

हमारे देश की एक सबसे बड़ी समस्या अशिक्षा भी है। अभी भी हज़ारों लोग जो,पढ़ लिख कर कुछ बनने का ख्वाब देखते हैं वो कभी पूरे नहीं होते। इसका एक सबसे बड़ा कारण यह है कि जो व्यक्ति अमीर होता है प्राय ये देखा गया है कि उनके बच्चे पढ़ने लिखने में रुचि नहीं रहती और माँ बाप उनसे अपने सपने पूरे करवाने के लिए एक बड़ी रक़म जमा कर रहे हैं जिसके कारण गरीब परिवार के बच्चे जो कि मेहनती होते हैं। गरीबी के कारण किसी भी जगह प्रवेश नही ले पाते नतीजतन या तो अपना पुश्तैनी कारोबार करने पर मजबूर हो जाते हैं या फिर अमीरों की गुलामी करते हैं।

भ्रष्टाचार का तो बोलबाला हमारे देश मे इतना है कि कोई भी मुश्किल काम पैसा देकर आसानी से किया जा सकता है लेकिन ये अमीर ही कर सकता है। गरीब तो बस अपने मुश्किल समय को कैसे टाला जाए इसी उधेड़ बुन में लगे रहते हुए जान तक गँवा देता है।

हर नए साल में हम अपने देश को तरक्की करने के सपने तो ज़रूर देखते हैं और जब साल गुज़रने को होता है तो हम खुद को उसी जगह पाते हैं जहां से नए साल की शुरुआत हुई थी।

इस साल चीजे बेहतर होने की उम्मीद करने के बजाए क्यों न हम खुद पर विश्वास करें कि हम उन्हे बेहतर कैसे बना सकते हैं। नई सोच का मतलब है खुद पर विश्वास करना, नए अवसरों के लिए तैयार रहना।

इसलिये हम सभी की ये सोच होनी चाहिए कि हर आने वाले साल मे हम जिस जोश के साथ जश्न मनाते हैं कम से कम उसी जोश के साथ एक काम तो ऐसा कर जाएं जिससे हमारे देश का कल्याण हो सके और हमारी आने वाली पीढ़ी भी सबक़ ले कि किस तरह हम अपने देश को उन्नति के मार्ग पर बढ़ता हुआ देखेंगे। -सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)

नवीनता का सतत आग्रह

प्रेम चन्द गुप्त

सामान्य मनुष्य के लिए भौतिक परिवर्तन, वैचारिक परिवर्तन का आधार बन जाता है। कुछ नया उत्साह, कुछ नई उमंग, कुछ नई आशाएं, कुछ नए स्वप्न, कुछ नई इच्छाएं आदि आदि लेकिन यह सामान्यतया भौतिक अथवा भौतिकता आधारित रहता है।

उक्त सोच ठीक भी है। जब जीवन ही भौतिक है तो आकांक्षाएं, परिकल्पनाएं, योजनाएं आदि भी भौतिक ही रहेंगी। ऐसा होने में कोई हानि भी नहीं है। भौतिक सफलता भी सफलता का एक स्वीकृत मानदंड है लेकिन यह एकमात्र मानदंड नहीं वरन एक मानदंड है।

नीति शास्त्र का कहना है- वृतं यत्नेन संरक्षेत वित्तं आयाति जाति च। चरित्र की यत्न पूर्वक रक्षा करनी चाहिए, धन तो आता जाता रहता है। धन भौतिकता का ही पर्याय है।

नया साल आ रहा है। पुराना साल जा रहा है। आने वाला कोरा कागज है। आने वाले से बहुत सारी आशाएं हैं। संभावनाएं हैं। इच्छा हैं कि बीते साल जैसा कुछ अघटित न हो। अगर पिछला साल कुछ अधिक ख़राब गया तो डर भी रहता हैं कि आने वाला कहीं और अधिक बुरा न हो लेकिन जाने वाले वाले ने अनेकानेक खट्टी-मीठी स्मृतियाँ हमारे मानस पटल पर अंकित कर दी हैं, जो जाने वाले के साथ कभी नहीं जाती।

ये स्मृतियाँ हमें सुख और दुःख दोनों ही देती हैं। इस डर, संभावना, इच्छा और खट्टी मीठी स्मृतियों के बीच नई सोच की गुंजाइश किसी चुनौती से कम नहीं हैं। खासकर पुराने दुःख दर्द को चलता कर देना।

हमारा मन भी बहुत स्वार्थी हैं। दुःखद स्मृतियों से बचना चाहता हैं। लेकिन, सुखद स्मृतियों को सहेज कर रखना चाहता हैं। अब समय तो बहता पानी हैं। वह तो अपने साथ अपने साथ सब कुछ बहा ले जाता हैं। बस अपना दाग छोड़ जाता हैं, इतिहास के रूप में।

इतिहास बड़ा निष्ठुर होता हैं। किसी के साथ कोई रियायत नहीं करता। आइना सामने रख देता हैं और हम हैं कि आईने से बचना चाहते हैं। यह प्रयास जितना अधिक होता हैं, आइना उतना ही पीछा करता हैं और इस लुका-छिपी में साल गुजरता जाता हैं। न तो समस्या का समाधान होता, न ही समय का सदुपयोग।

कितना अच्छा होता हम आईने का सामना कर लेते। सच को स्वीकार कर लेते। समय का सदुपयोग कर लेते। मुझे लगता हैं यह अच्छी सोच हैं लेकिन नई नहीं।

समय नित नवीन हैं। प्रवाहमान नदी की भाँति। यही बोध तो सिद्धार्थ को हुआ था और वे बुद्ध हो गए। तो क्या हम भी इस परिवर्तनशील समय को पहचानें और बुद्धत्व को और अग्रसर हो जाएं? विचार तो अच्छा हैं लेकिन इस सांसारिक अनुरक्ति का क्या होगा? वह भी तो हमारे सहारे ही गतिशील हैं, वह भी तो नित नवीन

हैं। ऐसा करना क्या पलायन नहीं होगा ?

भगवान कृष्ण का कथन हैं - कर्मण्येवाधिकारस्ते। कर्म करना हमारा अधिकार हैं। अधिकार को कैसे छोड़ा जा सकता है? एक बार कर्तव्य से विमुख हो सकते हैं लेकिन अधिकार तो नहीं छोड़ सकते। ब्रह्मास्त्र न सही, ब्रम्होस ही सही।

पड़ोसी परिवार हो या पडोसी देश, उस पर हमारा अधिकार है। यदि हमारे अधिकार को अस्वीकार करेगा तो मिसाइल प्रयोग के अधिकार का प्रयोग किया जाएगा। इसी अधिकार के तहत सारे देश नए नए हथियार बनाने, बेचने और खरीदने में लगे है। नई तकनीक खोजने, विकसित करने, नया बाजार, नया खरीददार, नया व्यापार।

बहुत कुछ नया हो रहा है। हर साल हो रहा है। हर देश में हो रहा है। इतना अधिक हो रहा है कि इससे इतर सोचने की फुर्सत ही नहीं है?

अब यह नया वाला मामला भी कोई नया नहीं हैं। कुछ भी नया करो, कुछ भी नया लाओ, थोड़े ही समय में पुराना हो जाता हैं अथवा यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि हमारा मन बहुत जल्दी ही बदल जाता हैं और कुछ नए के लिए भटकने लगता हैं। यह जो नवीनता का सतत आग्रह है, वास्तव में हमारी चंचल चित्तवृत्ति का प्रतिबिम्ब हैं। मन की यह चंचलता बहुत बलवान हैं। इस बात को भगवान कृष्ण ने भी स्वीकार किया है -असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम।

मनोविज्ञान इसको अलग तरीके देखता हैं। वहां एक पारिभाषिक शब्दावली प्रयुक्त होती, एकरसता। यह एक-रसता एक प्रकार का मानसिक विचलन, उबाऊपन, पैदा करती हैं। बेचारे काम के मारे लोग एक ढाबे से दूसरे ढाबे पर कुछ नया खोजते हुए अपनी एकरसता दूर करते हैं।

जो बेचारे नहीं हैं, वे इस काम के लिए विदेश चले जाते हैं। वैज्ञानिक नए हथियार, नए उपकरण, नई दवाएं नए अविष्कार में लगे हुए हैं। पढ़ने-पढ़ाने वाले नए विषय, नए प्रोजेक्ट, नया शोध आदि में तो नेता गण नई योजना और नए विरोध में व्यस्त है।

कुल मिला कर यह जो नया हैं, एक बीमारी हैं, जो पढ़े-लिखे लोगो में प्रमुखता से पाई जाती हैं। मनोवैज्ञानिक इस बीमारी के नए-नए लक्षणों को देखने परखने में लगे हुए हैं।

आपने कभी गांव के किसी किसान को या गृहिणी को या किसी मजदूर को नए के पीछे भागते देखा हैं ? मैंने तो नहीं देखा। शैशवावस्था से लेकर वृद्धवस्था तक एक ही प्रकार की दिनचर्या में रहकर भी मस्त रहता हैं। अवसर अथवा स्थिति के अनुसार खुश अथवा दुखी अवश्य होता हैं लेकिन, एकरस नहीं होता। तीर्थ जाता हैं तो पुण्य के लिए। मेले में जाता हैं तो जरुरत के सामान के लिए। रिस्तेदार के यहाँ जाता हैं तो सामाजिक व्यवहार के लिए। खेत-जंगल, नदी,-नाले, पेड़-पौधे, बाग़-बगीचे, परिवार-रिस्तेदार, बेटा-बहु वगैरह वगैरह इतनी सारी चीजें उसके आगे-पीछे रहती हैं कि एकरसता को स्थान ही नहीं मिलता। इसका स्थान तो आधुनिक जीवन-शैली में ही हैं।

निष्कर्ष यह कि यदि सचमुच हमें कुछ नया चाहिए तो अपने आधुनिक जीवन शैली पर विचार करना होगा। गिरते नैतिक मूल्यों पर विचार करना होगा। सीमाहीन महत्वाकांक्षा पर विचार करना होगा। उपभोगवादी दिनचर्या पर विचार करना होगा। व्यक्तिवाद पर विचार करना होगा। संयुक्त परिवार के क्षरण पर विचार करना होगा। स्वार्थ और लिप्सा पर विचार करना होगा। भारतीय सभ्यता और संस्कृति पर विचार करना होगा। राष्ट्रीय एकता और अखंडता पर विचार करना होगा। समाजवाद और धर्मनिरपेक्षता के पाखंड पर विचार करना होगा। इस प्रकार के अनेक आयाम हैं जिनपर नए सिरे से विचार करने कि आवश्यकता हैं। नवीनता का आग्रह पुरातन का तिरस्कार तो नहीं हो सकता न।

नई हैं ये दुनिया, ये इंसा नए हैं।
नई नस्ल के ख्वाबो-अरमां नए हैं।।
ये यूज एन थ्रो का जमाना हैं यारों।
इरादे नए अहदो पैमां नए हैं।।

-मंडीदीप (रायसेन)

स्वागत नूतन वर्ष तुम्हारा

डॉ प्रतिभा द्विवेदी

स्वागत नूतन वर्ष तुम्हारा,
बहे प्रगति की अविरल धारा।
प्रतिपल प्रतिक्षण आनंदमय हो,
सबका जीवन ज्योतिर्मय हो।
नए सूर्य का नवल उदय हो,
आलोकित हो यह जग सारा।
स्वागत नूतन वर्ष....
प्रेम दीप हृदयों में जले हों,
नैयनों में नव स्वप्न पले हों।
शांति सुमन चहुं ओर खिले हों,
सुरभित हो यह उपवन सारा।
स्वागत नूतन वर्ष....
सबकी पीड़ाएं हर लेना,
बधायें नहिं आने देना।
आहत मन को धीरज देना,
होगा यह उपकार तुम्हारा।
स्वागत नूतन वर्ष तुम्हारा

-भोपाल

नवीन सोच के साथ नव वर्ष

सविता व्यास

हर जाता हुआ वर्ष कुछ कहते हुए विदा लेता है। वह बातें जो हमारे लिए नितांत जरूरी है सुनना और उसे गुनना। वे बातें जो पटाखे के शोर में दब जाती हैं, वे विचार जो दिखावे के जाल में उलझ कर बुनने से रह जाते हैं। यदि बुन लें हम तो हमारी जिंदगी के लिए रेशमी पैरहन तैयार हो सकती है।

नए वर्ष के स्वागत के धूम -धड़ाके में हम जाते वर्ष के अनुभवों का लाभ लेने से वंचित हो जाते हैं। कभी रुकें और सुने उसे ध्यान से। सुनेंगे तो पायेंगे वह कह रहा है बेशक नव वर्ष का स्वागत करो जैसा मेरा किया था, सकारात्मक और आशावान रहना अच्छी बात है पर विवेक से सोचे कि इस नव वर्ष को आप कैसे लेंगे, क्या करेंगे? नव वर्ष कैसा रहेगा?

यह सब कुछ तो अपनी ही सोच पर निर्भर है। इसके लिए हमें हमारी रूढ़िवादी मानसिकता,पुरानी सोच को बदलना होगा न! हम नववर्ष का स्वागत तो करते हैं, उससे अच्छा होने की आस भी रखते हैं पर अपनी पुरानी पड़ गई सड़- गल गई सोच के साथ। इस वर्ष क्यूं न ऐसा करें कि हम नए वर्ष का स्वागत विदा लेते साल के अनुभव, ज्ञान से हम अपनी सोच को नवल -धवल बना कर करें। जो कह रहा है गत वर्ष उसे कान लगा कर सुने उसे अपनाएं। सुने तो क्या कह रहा है गत वर्ष?

जी लो जीवन के हर क्षण... ये जीवन क्षणभंगुर है। कब मैं आया और कब पलक झपकते ही तो मेरी उम्र बीत गई! तुम्हारी उम्र से मेरे जाने से एक साल कम हो गया। पता नही कितनी आयु शेष है, न तुम्हें पता है न मुझे ही पता है। अत: जो करना है इसी पल कर लो।

जो लक्ष्य निर्धारित किया है उसे सतत प्रयास से प्राप्त करने का प्रयत्न करते रहो। दीर्घसूत्रता को परे कर दो। धन, यश के पीछे भागते रहने से जो आनंद के पल तुमसे छूटते जा रहे हैं उन्हें समेट लो, खिलखिलाओ, गुनगुनाओ, नृत्य करो। पक्षियों की तरह बनो कलरव करते हुए अपने कार्य का आनंद उठाओ। ज्यादा संग्रह पर, और -और की चाह पर अपना समय व्यर्थ न करो।

दूसरों के लिए धन छोड़ने की बजाय अब थोड़ा अपने लिए भी जीने लगो। एक बार ही मिलती है जिंदगी उसे खुशी से बिताओ। छोटी सी ही है जिंदगी, ये वक्त वापिस नही आने वाला, वे यादें, वे पल जिसे तुम्हें जीना था, पाना था खो देते हो मुट्ठी से रेत की तरह। इन पलों को सकारात्मकता से जी लो।

धर्म के प्रति नव धारणा बनाओ..

धर्म एक मानसरोवर झील की तरह जिससे निकलती थी पुण्य की अनंत सलिलाएं, जो मानव के मन -हृदय को प्रक्षालित कर निर्मल और स्वच्छ बनाया करती थीं। धीरे -धीरे मानव मन की गंदगी ने इन धर्म नदियों को प्रदूषित कर दिया। जहां पवित्रता के कमल की खुशबू विचरती थी, जहां शांति के हंस तैरा करते थे वहां अब मानव -पाप की बदबू ही बदबू।

धर्म सड़ कर रह गया है। नव वर्ष पर क्यों न हम हमारे धर्म को पहले जैसा बनाने का संकल्प लें। संकीर्ण सोच से ऊपर उठकर सोच को विस्तृत करें! धर्म का असली उद्देश्य, सच्ची भावना को प्राथमिकता दें। ईश्वर एक है, पाने के धर्म और राहे

अलग -अलग है पर जिसे पाना है वह तो एक ही है इसे स्वीकारें। सब धर्म मिलजुल कर रहें, एक दूसरे का सम्मान करें और पवित्रता के पथ पर बढ़ते हुए आराध्य तक पहुंचे।

देश प्रेम की सकारात्मक सोच....

देश प्रेम, देशभक्ति से आशय हमने इतना भर कर लिया है कि क्रिकेट देखते हुए चौके -छक्के पर, विकेट गिरने पर सोफे पर बैठे -बैठे तालियां बजा दें, जीत पर पटाखे चला कर खुशियां मना लें और हार पर टीम को अपशब्द कहते हुए टीवी ही तोड़ दें। सरहद पर हमारी सेना की किसी देश विशेष पर विजय पर तिरंगे फहरा कर खुद को देशभक्त बता दें।

देश प्रेम, देशभक्ति का अर्थ है हम ऐसा कर्म करें कि हमारे देश का नाम रोशन हो। हम कैसे नागरिक हैं ? इससे हमारे देश की छवि बनती है। क्या संविधान से हमें केवल अधिकार मिले हुए हैं? क्या हमें दायित्व और कर्तव्य नही मिले हैं? क्यों हम अपने कर्तव्यों से जी चुराते हैं। क्यों कुछ पैसे के लिए अपना बहुमूल्य वोट बेच देते हैं? देश को स्वच्छ रखना, देश के संसाधनों का दुरूपयोग न करना, भ्रष्टाचार से देश को नुकसान न पहुंचाना ये है देशप्रेम। मैं एक दिन यूट्यूब पर देख रही थी कुछ देशों के लोगों से पूछा गया कि सबसे गंदा देश कौनसा सा है तो अधिकांश ने भारत का नाम लिया।

कितना मन आहत होता है यह सुनकर! सोने की चिड़िया कहलाने वाला देश अब ग़रीबी और गंदगी के लिए जाना जा रहा है! आज हमारा देश न केवल भौतिक रूप से मलिन हुआ है बल्कि यहां हृदय भी अत्यधिक मलिन हो गए हैं। सिगरेट, शराब, ड्रग्स, छेड़छाड़ आदि कितनी गंदगी हमारे देश में पैठ गई है!

नववर्ष पर अब हम प्रण करें कि वास्तविक देशभक्त बनेंगे सब गंदगियों से हम हमारे देश को मुक्त करेंगे। पर्यावरण के प्रति जागरूकता... नववर्ष पर हम यह बीड़ा भी उठा लें कि बिगड़ चुके, बर्बाद हो चुके पर्यावरण को फिर से स्वच्छ और आबाद करेंगे। जहां पग -पग नीर, पग -पग रोटी होती थी, जहां नदियों को मां कहा जाता है वहां नदियां सूख गई हैं, सड़ गई हैं, तालाब, झीलें दम तोड़ रहे हैं। पारिस्थितिकी तंत्र अस्त -व्यस्त हो गया है। कितने पक्षी, पशु लुप्त हो गए हैं। वन कट रहे हैं। विकास के नाम से असंख्य पेड़ कट गए हैं और विकास का क्या हुआ!!

भ्रष्टाचार ने विकास को भी भुरभुरा बना दिया। कुछ माह पहले बने पुल टूट रहे हैं, सड़क गड्ढे में तब्दील हो गई हैं। विकास वही ढाक का तीन पात। हमारे लालच ने हमारी वास्तविक संपत्ति को नष्ट कर दिया है। हरा -भरा भारत आज बिना वस्त्र के लूटा पीटा खड़ा है। हमने भारत मां की स्वच्छ हवा छीन ली, उसके अंतस तक का जल प्रदूषित कर दिया, बर्बाद कर दिया है, आकाश गंदा कर दिया, उसकी माटी की उर्वरता छीन ली। कलुषित मन, कलुषित तन लिए हम नकली आनंद मना रहे हैं और आश्चर्य की बात है कि हम शर्मिंदा भी नही हैं इसे नई संस्कृति बता कर अपने आपको आधुनिक बता रहे हैं। आईए, विदा लेते इस वर्ष की बातें सुने, गौर करें। सरलता, सादगी के दौर में लौट चलें। जो वास्तविक आनंद है उसे खोजें, हम हमारे भारत के लिए हमारी सोच को नवीन कर, विस्तृत कर नववर्ष के आगमन का स्वागत करें। सही मायने में देशभक्त बने, जिम्मेदार नागरिक बने और शांतिपूर्ण तरीके से सबको साथ लेकर, सबको नेह देकर, सबको हृदय से, मन से, खुले दिल से अच्छी शुभकामनाएं देकर नववर्ष मनाएं। नूतन वर्ष की अनंत शुभकामनाएं। -इंदौर

जीवन शैली बदलें

प्रमिला राउत

वर्ष २०२६ में अपने जीवन को बदलें अर्थात अपनी जीवन शैली बदलना चाहिए जिसमें सचेतनता, आत्मविश्वास, लचीलापन और सकारात्मक संबंधो को विकसित करने का संकल्प निहित हो।

स्थायी विकास और संतुष्टि के लिए लक्ष्य निर्धारित करें, जीवनभर सीखने को अपनाएं और क्षमा का अभ्यास करे। मजबूत रिश्ते बनाना हो या जीवन भर सीखने की ललक हो तो, आपका परिवर्तन निश्चित है।

आज ही कदम उठाएं। अपनी प्रगति पर लक्ष्य निर्धारित करने के लिए एक डायरी और पेंन का उपयोग करें। २०२६ के लिए एक सार्थक लक्ष्य निर्धारित करें या अपनी आकांक्षाओं को किसी ऐसे व्यक्ति के साथ साझा करें जो आपको जबाबदेह समझ सके।

परिवर्तन का मार्ग कई चुनौतियों से भरा हुआ है, लेकिन दृढता, समर्पण और उद्देश्य की स्पष्ट भावनाओं के साथ जीवन सार्थक बना सकते हैं जो न केवल आपकी आकांक्षाओं को पूरा करे बल्कि इससे भी आगे निकल जाएं। नए साल में मिलने वाले अवसरों को अपनाएं और इस वर्षो को उज्जवल और सार्थक भविष्य की नींव बनने दें। जैसे जैसे २०२६, आगे बढेगा अपने जीवन की कहानी को अपने हाथों मे लेने और अपने भविष्य को उद्देश्यपूर्ण ढंग से संवारने का उद्देश्य प्राप्त करें।

व्यक्तिगत विकास की यह यात्रा अत्यंत निजी होने के साथ साथ कठिन भी उतनी ही है, फिर भी इसका प्रभाव बहुत गहरा है। कल्पना कीजिए कि आप वर्षे के अंत तक कहां पहुचना चाहते हो और उस कल्पना को साकार करने के लिए सक्रिय कदम उठाएं। -नागपुर

लहर पर सवार नया साल

डॉ. मंजू शकुन खरे

नव विचार, नव प्रक्रिया द्वारा,
नव सृजन विस्तार करें।
नव रंग भर कर चिंतन में,
नव युग का सूत्रपात करें॥

मानव जीवन सदैव चुनौतियों से भरा हुआ रहा है।नया कुछ कर गुजरने की चाहत मानव को निरंतर आगे बढ़ने के लिये प्रेरित करती रहती है।असफलता ही वह नींव का पत्थर है जो हमारी कमियों को उजागर कर ,पुन: सीखने व सबक लेने का माध्यम बनती है। कहा जाता है कि मनुष्य सदा एक विद्यार्थी रहता है और जीवन एक प्रयोगशाला।

कौतुहल और जिज्ञासा ये ऐसे गुण हैं जो मनुष्य को अनवरत आगे बढ़ने और नया कुछ कार्य करने हेतु प्रेरित करते हैं। नव वर्ष पुन: दस्तक दे रहा है और हमें कुछ नया करने हेतु आह्वान भी दे रहा है।हमें अपनी सृजनात्मक प्रतिभा और कुशलता का पूरी तरह से उपयोग करना है और लक्ष्यों का निर्धारण भी करना है।

सर्वप्रथम हमें एक सूची बनाने की आवश्यकता है जिसमें हमारी मनोवृत्ति, शौक, आकांक्षा ये सभी सम्मिलित हों। इस सूची में आपके लक्ष्य निम्नानुसार हो सकते हैं-

(१)नया कौशल जो मैं सीखना चाहता / चाहती हूँ।
(२)कोई नई भाषा- फ्रैन्च ,स्पेनिश अथवा जापानी
(३)अंतर्राष्ट्रीय प्रसिद्ध व्यंजन बनाना
(४) डिजिटल फोटोग्राफी
(५)योग ,ध्यान, प्राणायाम आदि
(६) रचनात्मक लेखन गद्य अथवा पद्य
(७) गिटार अथवा पियानो वादन
(८) बेसिक कोडिंग
(९) पब्लिक स्पीकिंग
(१०)लेंडस्केप पेंटिंग
(११) मनपसंद यात्रा / पर्यटन
(१२) जॉब परिवर्तन

ऐसे बहुत सारे बिन्दु हो सकते हैं जो हमें आकर्षित करते हैं परन्तु हमें बहुत अधिक सोचने की आवश्यकता नहीं है। हमें उस चीज को चुनना है जो हमारी धड़कन बढ़ा दे और उत्साह से भर दे। भले ही यह आपको बड़ी और दूर की बात लगे,थोड़ी सी योजना बनाकर आप इसे कर सकते हैं। आपको बस ऐसा विचार चुनना है जो आपको उत्साह से भर दे।

इसके साथ ही आपको एक अन्य सूची उन सभी कारणों की भी बनाना है जिनकी वजह से आपने पहले कभी यह गतिविधि नहीं की। अगर आप कुछ नया विचार रखते हैं जो अभी- अभी आपके मन में आया है ,तो बस उन सभी चीजों की सूची बनाएं जो आपके रास्ते में रूकावट बन रहीं हैं। जैसे - एक प्रमुख बाधा धन भी हो सकता है, एक और महत्वपूर्ण बाधा समय हो सकती है। हो सकता है कि आपको लगे कि आपके पास उन नई चीजों को करने का समय नहीं है जो आप करना चाहते हैं।अन्य बाधाएं और भी कुछ हो सकती हैं कि आपको हवाई यात्रा या ऊँचाई से डर लगता हो अथवा आप में एकाग्रचित्तता की कमी हो। आप जल्दी ही अपने काम से बोरियत महसूस करने लगते हों।

सबसे पहले आपको शोध करना चाहिए कि आपने जो लक्ष्य निर्धारण किया है ,उसकी बाधाओं को किस प्रकार दूर कर सकते हैं। इसके लिये आपको संबंधित क्षेत्र की और अधिक जानकारी की आवश्यकता होती है।उदाहरण के लिये यदि यात्रा की योजना बना रहे हैं तो आपको यात्रा और आवास की लागत के साथ-साथ अन्य बातों जैसे पासपोर्ट, दर्शनीय स्थल आदि की जानकारी होना चाहिए। यह सभी इन्टरनेट पर आसानी से उपलब्ध हो जाता।

आपको सबसे जरूरी काम यही करना है कि प्रत्येक बाधा को छोटे- छोटे हिस्सों में तोड़ें।प्रत्येक समस्या को एक-एक कर दूर करने के तरीकों के बारे में सोचना शुरू करें। उदाहरण के लिये समस्या अगर पैसों से जुड़ी है तो यह तय करें कि लक्ष्य पूर्ति हेतु कितनी राशि की आवश्यकता है और एक निश्चित समय सीमा जैसे छ: महीने के भीतर पर्याप्त पैसे जमा करने के लिये आपको हर हफ्ते या हर महीने कितनी बचत करनी होगी।क्या आप कुछ विलासिता की चीजों को छोड़ सकते हैं अथवा कुछ अतिरिक्त काम कर सकते हैं?

अगर समस्या समय की है तो आप एक समय सारणी बना सकते हैं कि इस लक्ष्य के लिये आपको प्रतिदिन कितना समय निकालना होगा।आप सोशल मीडिया को दिये गये समय को कम कर सकते, अनावश्यक गपशप से बच कर भी कुछ समय निकालने का प्रयास कर सकते। यह भी हो सकता कि नींद के घण्टे में कुछ कटौती करना पड़े। अपने लक्ष्य को हासिल करने के लिये सर्वप्रथम आपको अपनी जीवन शैली में सकारात्मक बदलाव लाना होगा,परिवार और मित्रों को भी अपने निर्णय से अवगत करा कर उनका सहयोग लेना होगा।इससे आपके आस-पास एक सुन्दर वातावरण बनेगा और आप में उत्साह व ऊर्जा का संचार होगा।सकारात्मक आत्म- चर्चा, छोटी- छोटी उपलब्धियों का जश्न और स्वयं से शुरुआत- ये सभी आपके जीवन को आनंद से भर देगें और आपके लक्ष्य को आसान बना देगें। आरंभ कीजिए नव वर्ष पर ,अपने जीवन में नये लक्ष्यों को लेकर आगे बढ़ने की और नया कुछ कर गुजरने की। नई संकल्प शक्ति के साथ आगे बढ़िये और जीवन को एक उल्लासपूर्ण यात्रा में परिवर्तित कीजिए।

जीवन का हर पल इक लहर पर सवार है।
हौसलों में गर जान है तो न कुछ दुश्वार है।

-दतिया

नई पीढ़ी में नया सोच विकसित करें

वाणी नित्या

नया साल २०२६ आने के पूर्व ही मैंने सोचा कि क्यों ना नए साल में अपने सुख-सुविधा के स्थान पर बच्चों के कल्याण की बात सोची जाए। चूंकि कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलीजेंसी) जेन-जी कहे जाने वाली नई पीढ़ी विशेषकर बच्चों का अधिकांश समय लेने लगी है जिससे एक तरफ बच्चों को नए वैज्ञानिक युग में प्रवेश का अवसर मिल रहा है, वहीं उनके कलात्मक सोच में कमी या अभाव दृष्टिगोचर हो रहा है जिसका कारण बच्चे ना होकर उनके परिजन, अभिभावक, पालक और गुरुजन ही कहे जा सकते हैं।

इस संबंध में मेरा सुझाव है कि क्यों ना हम बच्चो के साथ क्वालिटी टाइम अर्थात सकारात्मक या गुणात्मक समय कैसे बिताएं। इस दृष्टि से आइये पहले जानते हैं क्वालिटी टाइम का अर्थ क्या है?

अपने बच्चों के साथ सभी समय बिताते हैं लेकिन उनके साथ जब आप होते हैं तब वह समय कितना गुणवत्तापूर्ण है इस बात की समझ ही समय की गुणवत्ता (क्वालिटी टाइम) को परिभाषित करती है।

आजकल की जिंदगी बहुत भागदौड़पूर्ण है या यूँ कहिये जीवन बहुत अधिक व्यस्त है , इस व्यस्ततापूर्ण जीवन में हम अपने बच्चों को किंचित ही समय दे पाते हैं और यह समय यदि गुणवत्ता पूर्ण हो अर्थात बच्चे कुछ सीखें भी, मस्ती भी हो और सबसे बड़ी बात यह कि बच्चे आपके साथ या सहकार में उत्साहपूर्वक रूचि दिखाएं जो बहुत अच्छी बात होगी। इस क्वालिटी टाइम के कारण आपके बच्चे का व्यक्तित्व निखरेगा औरवह आगामी जीवन में सकारात्मक अर्थात सृजनात्मक संघर्ष के लिए तैयार हो पाएगा।

आइये जानते हैं किस प्रकार आप पालक या अभिभावक होकर बच्चों के साथ समय की गुणवत्ता का कितना ध्यान रखते हैं अर्थात बच्चों के साथ कितना गुणात्मक समय बिता सकते हैं। इस दृष्टि से कतिपय सुझाव इस प्रकार हैं-

१. सबसे पहले खुद को भी और बच्चों को मोबाइल या किसी भी तरह के गैजेट्स से दूर रखें।

२. घर की सफाई , बाग़ बगीचे के काम में पेड़ पौधे लगाते समय उनको भी अपने साथ कार्य में लगाएं जिससे वो भी पौधों को पहचाने और उस पेड़ पौधे का महत्त्व जान सके।

३. बच्चों की पसंद का कोई कार्य करें जैसे अंताक्षरी खेलें, कैरम खेले, उनकी पसंद का कोई किताब साथ में पढ़े या फिर उनके साथ कहीं घूमने जाएँ। उन्हें किसी ऐतिहासिक स्थान पर ले जाकर उनको नई-नई जानकारी भी दें और उनसे पूछें कि क्या वो जानते हैं उस ऐतिहासिक जगह को ? यदि बच्चे उत्तर ना दे पाएं तो पालक/अभिभावक स्वयं संतोषजनक उत्तर दें। इससे उनकी उत्सुकता एवं जिज्ञासा का समाधान हो सकेगा।

४. खाना वनाते समय बच्चों को सब्जी काटने दें । साथ में कुछ रेसेप बनाना सिखाएं , इससे उनकी ख़ुशी दोगुनी होगी ।

५. उनकी पसंद को प्राथमिकता दें । फिर देखिये बच्चे आपके साथ भी रहेंगे और आपका सम्मान भी करेंगे।

६. बिना कारण उनके किसी काम पर टीका टिपण्णी न करें। हमेशा ही उनको प्रेरित करें कुछ अच्छा करने के लिए।

७. उनके आत्मविश्वास को कभी ठेस न पहुंचाएं, साथ ही उनके साथ बैठकर योग करें तथा योग के साथ ध्यान व साधना का महत्त्व भी समझाएं ।

८. बच्चे जितना डाँट-फटकार से नहीं समझते उतना वह प्यार से समझते हैं इसलिए जब भी साथ हों ध्यान रखें कि उनके साथ बिताया हर पल प्रसन्नतापूर्ण हो, न कि बोझिल और उबाऊ ।

९. उनके साथ जब भी हों याद रखें उनकी हरेक बात को नियंत्रित न करें ,उनकी सुनें कि वह क्या कहना चाहते हैं। यदि गलत कहें तो उन्हें समझाएं। यदि वह कुछ अच्छा विचार आपके सामने रखें तो ख़ुशी व्यक्त करें और शाबाशी दें।

१०. सबसे आखिरी बात यह है कि आप उनके दिल की बात जानें, उनको अपनी उपस्थिति का बोध कराएं और यह बताएं कि वो आपके लिए कितने महत्वपूर्ण हैं और समय व समाज की जानकारी भी दें और लें भीं । इससे आपको भी पता चलता रहेगा कि उनके साथ क्या हो रहा है ।

बच्चे हमारे भविष्य के कर्णधार है, देश के भावी नेता हैं उनका उचित ध्यान रखना और उनको परिपक्वता की ओर सही तरीके से ले जाना हम अभिभावकों का परम कर्तव्य है।

-काठमांडू

युवाओं की जीवन शैली

ललित शर्मा

३१ दिसम्बर और १ जनवरी में नए वर्ष में पुराने वर्ष की विदाई और मिलन का दिन एक सीख देता है। यह सीख नए वर्ष के आगमन में नए संकल्प में नए नए सकारात्मक कार्यक्रम के संकल्प में सफलता अर्जित करे यह लक्ष्य युवाओं को बखूबी आंनदपूर्वक लेना चाहिए । आंनद के साधन में नशा क्यों ? दरअसल युवा लक्ष्य प्राप्ति में दिशाहीन सा भविष्य में भटकता है। नए वर्ष पर नई राह में बढ़ने में अज्ञानी सा है । आज के आधुनिक युग की बदलती जीवनशैली में अधिकांशतः मानसिकता आधुनिक प्रतीत होती है। इसमें जीवनशैली के जीवनकर्म की निम्न स्तरीय मानसिकता के मौजूद रहने से कदापि इंकार नही कर सकते है।

आज के कुछ युवाओ में नशे की गलत लत की मानसिकता कूट कूट कर भरी है । वे शौक पालकर आधुनिक युग में शिकार हो गए है, इस शिंकजे में जकड़े है। मांगलिक शुभघड़ी, उत्सव तीज त्योंहार, शादी विवाह, या फिर नववर्ष के आगमन का आगमन या पुराने वर्ष के विदाई पर नशे से खुशी को खोजते है यानि अब नशेड़ी बनकर जमकर मस्ती आंनद में ऐसे युवाओं की अवस्था अनियन्त्रित है । खासकर भटकते युवाओं को नए वर्ष पर नशे के उत्साह मस्ती के आनंद में गोता लगाना कहाँ तक आंनद का का अनुभव कराता है । नए वर्ष में नशे की लत त्यागने का संकल्प लेने के बजाय जीवन को नशे में अंधकार की तरफ धकेलते है ।

नए वर्ष पर नई सकारात्मक सोच में नई राह में ढ़ंढने में आज युवाओं पर अधिक भरोसा है । वे विपरीत नशे को सुखदायक घुंटी पीने में मग्न है । उसी बुरी लत में बुरे फंसे है । यह हालात युवाओं को जबकि नकारात्मक राह ही दिखा रही है । युवा को समझना चाहिए कि शारीरिक मानसिक शक्ति कमजोर करने का कारण नशा ही है । नई सकारात्मक सोच से युवा भटककर जीवन का बहुमूल्य समय गंवा रहे है । नए वर्ष के नाम पर फिजूलखर्ची कार्यक्रम में खुद को खो रहें है, फिर भी युवा न जाने क्यों मौन क्यों अचेत है ? नए वर्ष में नए सिरे से जीवनकर्म की खुशी बांटे न कि गलत संगत में स्वयं को धकेलने में लगा रहे । नशा की चाहत में डुबा नाश ही नही सर्वनाश कर बैठता है।

वर्ष की विदाई पर सजती सँवरती महफ़िल वह रात खुशी के जश्न में युवा को खुशी में समर्पित जरूर करती है लेकिन उसके जीवन सामाजिक, शिक्षाप्रद, संस्कृति, संस्कार की रक्षा का संदेश ऐसे नजारे में कदापि प्राप्त नहीं होता है । चकाचोंध रंगबिरंगी बिजली में भविष्य के संस्कृति, संस्कार विहीन जीवनकर्म में दिन गुजारता है । चंद पल के आंनद में न नई सोच, न नई शिक्षा, नई प्रगतिशील विचारों आदि से वंचित होता है । यह युवा के जीवन मे बड़ा बाधक मोड़ होता है । युवाओं में इस बात की मानसिकता मजबूत हो कि वह नए वर्ष को नई वस्तुओं जैसा समझे उसका मोल समझे । नया वर्ष अनमोल उपहार है । वर्ष २०२५ के बाद सीधे अगले वर्ष २०२६ में रहेंगे । युवा स्वयं विचार करे कि आज का तौर तरीका सामाजिक जीवन में होनहार नही बनाता अच्छी सोच से परे हानिकारक है। इसमें नकारात्मक गलत संदेश की भरमार से विवेकपूर्ण निर्णय से दरकिनार हो । आज लेकिन वही युवाओं में ग्रहण करने की होड़ मची हुई है । युवा सकारात्मक सोच का नशा अपनाकर आगे बढ़ने की गांठ बांध लें, नकारात्मक सोच का नशा उसकी चाव से ले रहा चुस्कियां लेना पूरी तरह से बंद करे

आज नग्नता मग्नता का फूहड़पन, अशोभनीय परिधान उसकी झलकियां आदि में युवा के दिमाग मे सकारात्मक विचारों का अभाव निश्चित रहेगा । वह उसी में समर्पित उसी उल्लासपूर्ण माहौल में रहने की शान दर्शाता है । इसका समस्त समाजहित में व्यापक कुप्रभाव पड़ता भविष्य की पीढ़ी में सकारात्मक सन्देश कदापि नही दे सकता है आज आधुनिकता में अंधी प्रतियोगिता का बोलबाला है । आलीशान और लुभावना आकर्षक नजारा खासकर युवाओं में ज्यादा आकर्षणों में भरा है ।

नववर्ष का आगाज बिल्कुल नए नए अंदाज में सूक्ष्म के बजाय बड़े समारोह के रूप में सजते है । कुछ युवा युवतियों के अन्य दर्शको की भीड़भाड़ में नगर से महानगरों में आकर्षक कार्यक्रम की प्रतियोगिता का नया रंग नव वर्ष पर गहरा चढ़ने लगा है कि वह एक ऑफर टिकट में आयेजित होने वाला दिखावटी,आडम्बर का कार्यक्रम बन रहा है । वर्ष विदाई के नाम पर कार्यक्रम को नशे में आयेजित कराना क्या उचित है या ऐसे कार्यक्रम में भाग लेना उचित है ।आज व्यापक तैयारी कार्यक्रम सबसे अहम बात यह दिखती है कि पाश्चात संस्कृति का वर्ष विदाई के दिन चटकीला नया रंग चढ़ा दिया जा रहा है । यह धन, समय शिक्षा और संस्कृति की बर्बादी में सबसे बड़ा रोढ़ा होता है ।

शिक्षाप्रद या ज्ञानवर्धक आयोजन के विपरीत फूहड़पन में अश्लीलता की भरमार में अश्लील नृत्यों की बहार, नशे में चकनाचूर युवा युवतियों के अश्लीलता से भरे भोंडे नृत्यों आदि क्या समाज मे हितकारी है इस नई आधुनिकता का असर समाज मे नए वर्ष में एक चिंतनीय विषय है । इसमें बदलाव की चर्चाओं को तूल देना उसपर जागरूकता बढ़ाना अतिशीघ्रता से मिलकर करने की जिमेवारी है ।

–असम

देश की सरहद आँगन तक ही नहीं है !

इन्दिरा किसलय

सूरज की एक करवट बीते कल की रात को अगले कल की सुबह में तब्दील कर देती है। उगते हुये सूरज के साथ सौ सौ इरादों ,चाहतों, संकल्पों, सपनों की किरणें जगमगाते लगती हैं।

ऐसा कुछ भी नहीं होता पूर्व संध्या और नवल प्रभात में।बस हमने अपनी सुविधा की खातिर महाबली वक्त को तारीखों में बाँटा और कैलेंडर में दर्ज कर दीवारों पर कील ठोंक कर टाँग दिया। अब तो कितनी ही पुरानी प्रथाओं को विदाई दे दी गई है।ग्रेगेरियन कैलेंडर को हमने मानक बना लिया है। 31 की रात बारह बजे के बाद कुदरती अंधेरे और कृत्रिम उजालों के बीच जश्न मनाया जाता है।जबर्दस्त आतिशबाजी से आसमान को झिलमिल सितारों का तोहफा दिया जाता है।

दरअसल 1 जनवरी पर उत्सव की चकाचौंध में हम खुद को आश्वासन देने में कामयाब हो जाते हैं कि समूचा वर्ष सौभाग्य लिये आयेगा। सूर्योदय से ज्यादा इत्तफाक न रखनेवाली जेन जी और अल्फा पीढ़ी रात्रि में न्यू ईयर बैश का इन्तजाम करती है। मादक द्रव्य और उत्तेजक संगीत की धुनों पर थिरकती हुई बिंदास और बेखयाली का मौसम रचती है।आधुनिकता बोध का इश्तिहार चस्पां करती है वक्त की दीवार पर। पुरानी प्रथाएं अब आउटडेटेड हो गई हैं । फैशन है ,कोई न कोई रेजोल्यूशन (प्रस्ताव) पास करना है जिसे कुछ कदम चलकर गायब हो जाना है।जैसे गधे के सिर से सींग। बेशक व्यक्तिवादी युग में सारी सोच के केन्द्र में 卐केवल मैं होता है।देखना होगा कि कितने संकल्प समाज और राष्ट्र की खातिर हृदय में जगह घेरते हैं।

अन्याय के खिलाफ आवाज़ बुलंद करना लोकतंत्र का स्वभाव है। इसका अतिक्रमण न हो। हैली गुब्बी ज्वालामुखी से फूटें नहीं और न मोम की तरह दबते रहें, दीपशिखा की तरह राहें रोशन करते चलें हम।

बेशक बड़े सपने देखना गुनाह नहीं पर बेपर की उड़ानों का कोई औचित्य भी तो नहीं। युवाओं में करियर को लेकर संजीदगी,वयस्कों के मन में भविष्य की रूपरेखा या महिलाओं के शुभ संकल्प मानीखेज हैं ,बस शर्त इतनी सी कि जमीनी सच नज़रअंदाज़ न हो। चीनी ज्योतिष २०२६ को YEAR OF THE FIRE HORSE घोषित कर चुका है। उर्जा, तेज, गति, और समदर्शिता के साथ।यह धारण करने योग्य है।

सामान्यत: नवाचार ,नवाशा, ऐश्वर्य एवं उज्ज्वल भविष्य की आहटों को सुना जा सकता है। क्या कोई अंतरिक्ष यात्री बनने का स्वप्न पाल सकता है जो शुभांशु शुक्ला की तरह स्पेस से हर दिन १६ सूर्योदय और १६ सूर्यास्त देख सके।

विकास के नाम पर कभी धर्म के नाम पर लाखों पेड़ों की बलि चढ़ रही है।युवाओं में हलचल जरूरी है।वे चिपको आन्दोलन का हिस्सा बनने को संकल्पित हों।पेड़ों की दुआएं लें। ए .सी नहीं पेड़ लगाएं।साइकिल चलाएं। पर्यावरण प्रदूषण को रोकना हमारी नैतिक जिम्मेदारी बने।

बेशक जमाना पेपरलेस हो रहा है पर डिजिटल इंडिया के पीछे ध्वंस छिपा है। चैट जी पी टी से एक सवाल पूछने में गूगल सर्च से १० गुना बिजली खर्च होती है।चैट जी पी टी एक दिन में एक अरब सवालों का जवाब देता है।इससे अंदाज लगाना मुश्किल तो नहीं।बेहिसाब बिजली और पानी की खपत। डिजिटल डिटॉक्स जरूरी।हर दिन सात घंटे मोबाइल पर गुजारनेवाले अपनी सोच को जाग्रत करें। जॉम्बी स्क्रॉल से एक अन्यमनस्क, दिशाहीन, बिखरे हुए मन का पता न दें। ए .आई का गैर वाजिब इस्तेमाल न करने का इरादा भी २०२६ की झोली में डाला जा सकता है।

राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति भी कुछ कर्तव्य हैं हमारे। कुछ सांस्कृतिक आग्रह भी हैं। फैशन और परंपरा का फ्यूजन भी चलेगा पर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर अतरंगी उपक्रम मान्य नहीं हो सकते।

क्या हम आज भी नहीं समझेंगे कि हिन्दुस्तान हमारे आँगन की सरहद से आगे भी है। सिविक सेंस का घटता दायरा चिन्ताजनक है। सोच की दिशा को पाखण्डी बाबाओं की दिशा में भी मोड़ने की जरूरत है। सबसे भयानक है फोमो यानी FEAR OF MISSING OUT.

मुख्य धारा से अलग थलग पड़ जाने का डर। यही वजह है कि आज सच और झूठ के बीच का अंतर लगभग खत्म सा हो गया है। हमारे प्रस्ताव में इस बात का भी ज़िक्र हो कि हम किसी की कठपुतली, किसी के पिंजरे का तोता नहीं बनेंगे। राष्ट्रहित ऐसे सिद्ध होगा।

जीवन में बुलंद इरादों के साथ छोटी छोटी बातों में खुशियां ढूँढने की जापानी शैली इकिगाई हमारी बहुत मदद कर सकती है। रूजवेल्ट ने कहा था–जो राष्ट्र अपनी मिट्टी को नष्ट करता है, वह खुद को नष्ट कर देता है। आशय स्पष्ट है नूतन वर्ष पर्यावरण की समन्वित अवधारणा को बल प्रदान करे। हम भारत भू के प्रति कृतज्ञ हों।

कह दो जाकर हवाओं से
अपनी औकात में रहें
हम परों से नहीं
हौसलों से उड़ान भरते हैं॥

–नागपुर

INDIA ART FESTIVAL

INDIA ART FESTIVAL™
India's Contemporary Art Fair

The biggest Art Fair network
since 2011

INDIA ART FESTIVAL

04-06 APRIL 2025
KINGS CROWN CONVENTION
HYDERABAD

07-09 NOV 2025
CONSTITUTION CLUB OF INDIA
NEW DELHI

12-14 DEC 2025
PALACE GROUNDS, BENGALURU

30 JAN-01 FEB 2026
NEHRU CENTRE, MUMBAI

MUMBAI ART FAIR

10-12 OCT 2025
NEHRU CENTRE, MUMBAI

+91 8976044104, 8976044107, 8976044108
indiaartfestival@gmail.com, indiaartfestival2014@gmail.com
indiaartfestival2016@gmail.com, www.indiaartfestival.com

जे.के.स्टील फर्नीचर
भोपाल
जीवन मारण
स्वत्वाधिकारी संपर्क-9826422823
१. पेट्रोल पंप के सामने,चूना भट्टी, कोलार मुख्य मार्ग, २. सर्वधर्म कॉलोनी सी सेक्टर पुल समीप कोलार मुख्य मार्ग, ३. बरखेड़ी कलां मुख्य मार्ग, भोपाल

THE BEST MEDIA TO ENHANCE
YOUR FOOTWEAR BUSINESS
footbizz
Step into the Future of Footwear
SCAN THE QR CODE TO DOWNLOAD THE APP
For Apple
For Android
INDIA'S FIRST
B2B FOOTWEAR APP
THAT SOLVES EVERY
PROBLEM FACED BY
MANUFACTURERS
AND WHOLESALERS.
Combo Offer
@4000/-
DFMN + FOOTBIZZ
Get 1 Year Subscription
SOFT COPY
ALSO AVAILABLE
Book Your
Advertisement Today
& Promote Your Brand
in India & Abroad
DELHI FOOTWEAR MARKET NEWS ESTD. 1984
footbizz
Step into the Future of Footwear
DELHI FOOTWEAR MARKET NEWS
25, Central Market, Ashok Vihar, Phase-1, New Delhi -110052
Ph. : 011-47028361, Mob.: 9717730178, Email: dfmn22@gmail.com

RAM NIWAS & SONS
SRD STEELS (P) LTD.

SETH RAM NIWAS GUPTA
Chairman

SANJEEV GUPTA
Director

RAJEEV GUPTA
Director

DEEPAK GUPTA
Director

skgc

SHRI KRISHAN GRIT CO.
SKGC MINERALS LTD.

BRANCHES

Delhi • Mumbai • Bhopal • Bhilai • Ludhiana • Faridabad • Ahmedabad
Ghaziabad • Roorkee • Bangalore • Indore • Jaipur • Kanpur (U.P.)

Dr. Sanjeev Gupta (The Winner of)

- Global Business Icon Award - 2018
- Asia One-Global Indian of the Year 2018-19
- India's Greatest Brands 2018-19
- ARCH of Excellence Award
- Winner of National Award in 2021

- Meri Dilli Shresth Shree Sammaan - Nov. 2020
- ISI Mark from Bureau of Indian Standard - Dec. 2020
- Meri Dilli Shresth Shree Sammaan - Aug. 2022

स्वामी-मुद्रक-प्रकाशक-संपादक कैलाश श्रीवास्तव 'आदमी' द्वारा राघव भवन,गली क्र. 6/72 दयालपुर,दिल्ली 110090 से प्रकाशित,निर्दलीय प्रेस,भोपाल से मुद्रित।